

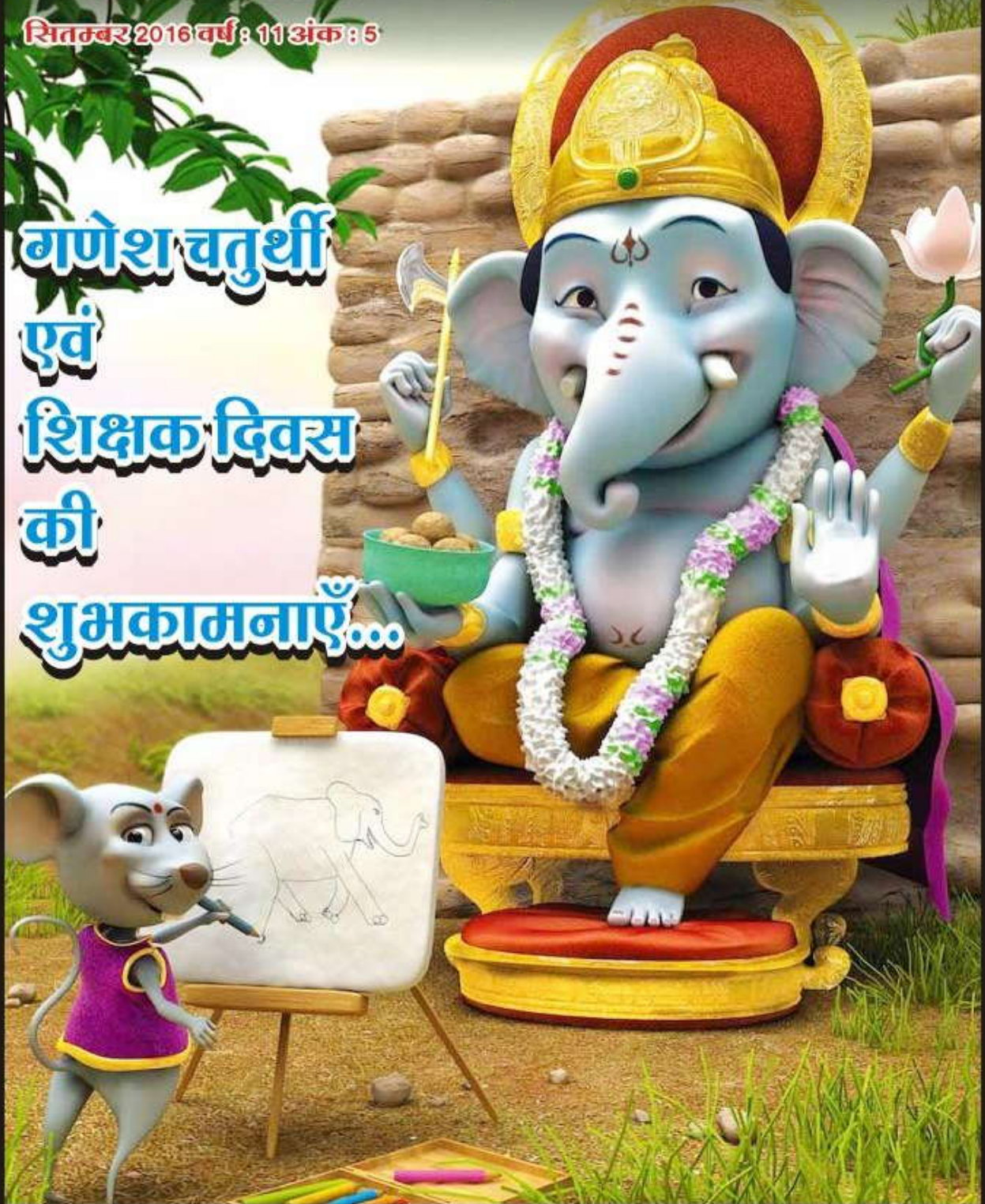
मासिक

jaihaatkeshvani.com

जय हाटकेश वाणी

सितम्बर 2016 वर्ष: 11 अंक: 5

गणेश चतुर्थी
एवं
शिक्षक दिवस
की
शुभकामनाएँ...



चि. वात्सल्य शर्मा को सी.एस. बनने पर बधाई

चि. वात्सल्य शर्मा
(सुपुत्र श्रीमती अर्चना बसन्त शर्मा)
को सी.एस. (कम्पनी सेक्रेटरी)
बनने एवं एल.एल.बी. के सफल
दो वर्ष पूर्ण होने पर
हार्दिक शुभकामनाएँ।



आपने यह सफलता प्राप्त कर समाज को गौरवान्वित किया है।
हम सभी आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।

बधाईकर्ता— शर्मा परिवार राऊ, मेहता परिवार भुवाजी, फुफाजी (महू) मेहता परिवार (मामा परिवार उज्जैन) व शाजापुर, नागर परिवार (दीदी—जिजाजी) रतलाम एवं सभी समाजजन मित्रगण
सौजन्य से— तन्मयता रितेश नागर



आसमान का चोंद तेरी बाहों में हो, तू जो चाहे वो तेरी राहों में हो
हर ख्याव हो पूरा जो तेरी आँखों में हो, खुश किस्मती की हर लकीर तेरे हाथों में हो

चि. रैयांश याज्ञिक

(सुपुत्र— चित्रेश— नताशा याज्ञिक)

17 सितम्बर 2016

को उसके प्रथम वर्षगाँठ पूर्ण होने पर उसके
नाना—नानी (श्री शरद भट्ट एवं श्रीमती मंजू भट्ट)
और मासी—मासाजी श्री दिनेशजी एवं अक्षता
की तरफ से खूब सारा आशीर्वाद एवं प्यार



तृतीय पुण्य स्मरण

स्व. दीपशंकर याज्ञिक

27 सितम्बर 2016

जीवन पथ के मुश्किल समय में
आपके सिद्धान्तों, कर्मठता एवं आदर्शों से ही
हमें हर पल सफलता मिलती है।

अणिमा, दिव्यांश, अनमोल
एवं समस्त याज्ञिक परिवार कोलकाता

संस्थापक



श्री शिवप्रसादजी शर्मा श्रीमती प्रमा शर्मा

प्रेरणा स्रोत



श्री गोवर्धनलालजी मेहता श्री विष्णुप्रसादजी नागर

संरक्षक

- पं. श्री कमलकिशोर नागर, सेमली
पं. श्री आर.के.झा, कोलकाता
पं. श्री पुरुषोत्तम (परेश) पी. नागर, मुम्बई
पं. श्री महेन्द्र नागर, बँगलौर
पं. श्री नवरत्न व्यास, हैदराबाद
पं. श्री हरिप्रसाद नागर, अकलेरा
पं. श्री सुभाष व्यास, भोपाल
पं. श्री ओमप्रकाश मेहता, भोपाल
पं. श्री सुनील मेहता, मन्दसौर
पं. श्री सुरेन्द्र मेहता (सुमन) उज्जैन
पं. श्री कृष्णानंद मेहता, खण्डवा

प्रधान सम्पादक
सौ. संगीता दीपक शर्मा

सम्पादक
सौ. दिव्या अमिताभ मंडलोई
सौ. दमिता नवीन झा
सौ. आभा विजयशंकर मेहता

विज्ञापन
पवन शर्मा-9826095995

झरोखा



कोलकाता में
सावन उत्सव

07

उज्जैन में चिकित्सकों को सम्मान



11



इन्दौर में नागर
महिला मण्डल
की गतिविधियाँ

10

घर, परिवार एवं संस्कार



18

जय हाटकेश वाणी

सम्पर्क- अवन्तिका परिसर, 20, जूनी कसेरा बाखल, (खजूरी बाजार), इन्दौर-452002
फोन : 0731-2450018, मो. 9826095995, 9926285002

website : www.jaihaatkeshvani.com, / E-mail : jayhotkeshvani@gmail.com / manibhaisharma@gmail.com

बदलाव से आकर्षित होंगे युवा

क्या कारण है कि सामाजिक मंच पर प्रोत्साहन के बजाय टांग खिंचाई होती है तथा प्रशंसा के बजाय आलोचना। वर्तमान समय की राष्ट्रव्यापी चिंता है कि युवा समाज सेवा गतिविधियों में हिस्सा नहीं लेते, वे विमुख हो रहे हैं, तो इसके पीछे जो कारण है उनका अवलोकन कर उनके प्रति चिंतन क्यों नहीं किया जा रहा है?

दरअसल आज का युवा आलोचना पसंद नहीं करता, उसे प्रशंसा पसंद है। उसे टांग खिंचाई के बजाय प्रोत्साहन की जरूरत है और इन दोनों चीजों का समाज में सर्वथा अभाव है। खासकर हमारे समाज में जहां प्रबुद्ध एवं पढ़े-लिखे लोग ज्यादा हैं, उनके बीच सामंजस्य बहुत मशकिल है, जो समाज कम शिक्षित है, वे अधिक संगठित पाए जाते हैं उनके बीच मतभेद कम है। हमारे समाज में वरिष्ठ समाज सेवक अपनी वाली चलाते हैं, वास्तव में तो वे अपनी प्राथमिकता ही तय नहीं कर पा रहे हैं, वे भ्रमित हैं जब आपके लीडर ही मानसिक तौर पर सुलझे हुए



नहीं हैं तो वे समाज का भला कैसे करेंगे, समाज-सेवा में अपने आपको श्रेष्ठ साबित करने की होड़, प्रतिस्पर्धा एवं मोनोपाली जैसे अवगुणों ने समाज का तो भला किया नहीं उल्टा युवाओं को समाज की मुख्य धारा से लगभग काट दिया है। समाज के कर्णधारों को समाजोत्थान के विचार समाजजनों से एकत्र करना चाहिए तथा समाज में उन संस्थाओं की तरह माहौल तैयार करना चाहिए, जहाँ रचनात्मक गतिविधियाँ होती हैं तथा सबका समान सम्मान होता है, गलतियाँ होने पर भी प्रोत्साहित किया जाता है। तब जाकर युवा आपके समाज सेवा प्रकल्पों में आगे आएंगे। रुढ़ीवादी परम्पराओं को

खत्म करने लिए दिशानिर्देश तय किए जाना चाहिए। समाज को सम्पन्न एवं समर्थ बनाने का सोच होना चाहिए। युवाओं को शिक्षा एवं रोजगार की व्यवस्था होनी चाहिए। कुछ अच्छी योजनाएँ बनेगी तो समाज का भला होगा तथा वास्तविक समाजसेवा की परिकल्पना साकार हो सकेगी। कम से कम जो लाभान्वित होंगे वे समाज की ओर अवश्य ही आकर्षित होंगे।

-सम्पादक

सदस्यता-नवीनीकरण आवेदन पत्र

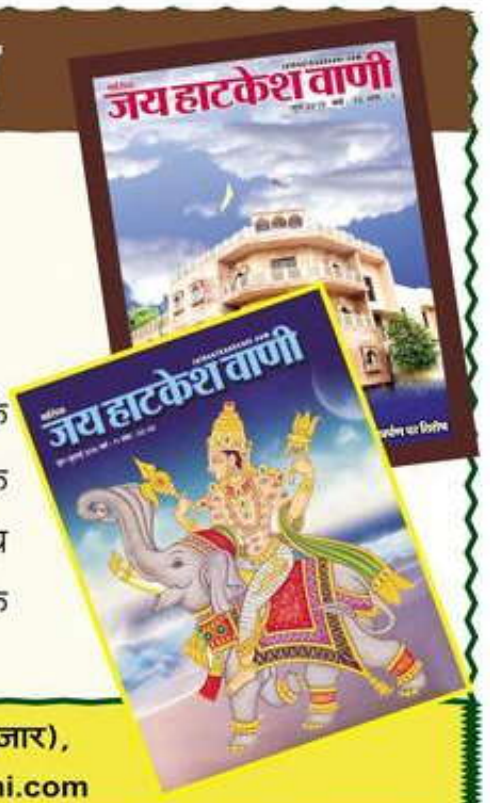
मैं

डाक का पूरा पता (पिनकोड सहित)

मासिक **जय हाटकेश वाणी** का आजीवन सदस्य बनना चाहता हूँ। जिसके लिए निर्धारित आजीवन सदस्यता शुल्क 550 रु. नगद/चैक/ड्राफ्ट या आपके बैंक अकाउंट द्वारा निम्नलिखित पते पर भेज रहा हूँ। मैंने यह शुल्क आपके खाते 'जय हाटकेश वाणी' केनरा बैंक शाखा एम.जी. रोड़, (गोराकुण्ड) इन्दौर में खाता क्रमांक - 0325201004027 में जमा किया है।

सम्पर्क- **जय हाटकेश वाणी**, 20 जूनी कसेरा बाखल (खजूरी बाजार), इन्दौर-452002 मो. 9926285002, 9926563129 www.jaihaatkeshvani.com

E-mail : jayhotkeshvani@gmail.com / manibhaisharma@gmail.com



बोझ बनते त्यौहार



अफसोसजनक है कि जिस प्रकार
खाद्य वस्तुओं में स्वाद खत्म हो गया,
फूलों में सुगंध गायब है,
रिश्तों से प्रेम लापता है, उसी प्रकार
धर्म अब दिखावा हो गया और झूठ
सब बातों का असर उत्सव पर भी पड़ा।
इसी वजह से पहले उत्सवों के
दौरान जो वातावरण में परिवर्तन
होता था वह अब नहीं होता।

अगस्त माह में रक्षाबंधन से जो त्यौहार की श्रृंखला शुरू होती है वह देव उठनी एकादशी पर्यन्त चलती है। वैसे देखा जाए तो त्यौहारों का सृजन किए जाने का मुख्य उद्देश्य एकमात्र 'उत्साह' है। उत्साह का ही प्रतिरूप उत्सव का मुख्य उद्देश्य धूमिल हो चुका है तथा आज उत्सव बोझ बनने लगे हैं, उत्सव धर्म से जुड़ा मामला है और धर्म 'शो' की वस्तु बन चुका है तो उसी के साथ उत्सवों का भी यह हश्र होना तय था।

धर्म निहायत ही आंतरिक विषय है, लेकिन वर्तमान में वह दिखावे की वस्तु हो चुकी है। ज्यादातर उत्सव धर्म से तथा समाज से जुड़े हैं इसी बीच सोलह दिन श्राद्ध के आते हैं, हम मानते हैं कि दिवंगत भी भगवान के घर जाते हैं या आत्माएं परमात्मा में ही समाहित होती हैं, बहरहाल वह अवधि भी उत्सव एवं श्राद्ध का ही विषय है। अफसोसजनक है कि जिस प्रकार खाद्य वस्तुओं में स्वाद खत्म हो गया, फूलों में सुगंध गायब है, रिश्तों से प्रेम लापता है, उसी प्रकार धर्म अब दिखावा हो गया और इन सब बातों का असर उत्सव पर भी पड़ा। इसी वजह से पहले उत्सवों के दौरान जो वातावरण में परिवर्तन होता था वह अब नहीं होता। भौतिक जरूरतों और नौकरी धंधों की वजह से परिवार बंट गए हैं, आना-जाना महंगा पड़ता है। उत्सव केवल औपचारिकता बन गए हैं। भारी महंगाई के दौर में ये खर्चों में वृद्धि करने आते हैं। सब कुछ बदल गया है। समय की गति तेज हो चुकी है। सब कुछ जल्दी-जल्दी, लोगों की गति भी तेज हो गई है, वे भी बेतहाशा भाग रहे हैं।

जीवन के मायने बदल चुके हैं। मनुष्य को अपने घर-धंधे की चिंता सबसे ज्यादा है और सब चीजे अब बेमानी लगने लगी हैं। उसके पास न रिश्तों के लिए समय है, न अध्यात्म के लिए, न उत्सव के लिए। हालांकि कालान्तर में जब उत्सवों का सृजन किया गया था, तब आज की परिस्थितियों का ही ध्यान रखा गया होगा कि इस समय इन्सान सबसे ज्यादा व्यस्त रहेगा, किन्तु भले ही बोझ समझकर या औपचारिकता वह लोकलाज के लिए मनाता रहेगा। यदि उत्सव में वास्तविक उत्साह पैदा करना है, तो मनुष्य को सबसे पहले धर्म से जुड़ना पड़ेगा और वह भी आंतरिक रूप से तब ही सब चीजें सही हो सकेगी। अन्यथा उत्सवों की चमक फीकी पड़ती ही जाएगी।

उत्सवों के सृजन में मुख्यतः धर्म समुदाय एवं परिवार को मुख्य बिन्दू बनाया गया, जिसका उद्देश्य धर्म एवं संस्कृति को पोषित करना है। भाई-बहन हेतु रक्षाबंधन का त्यौहार बनाया गया तथा यह प्रमुख त्यौहार है बहुत ज्यादा मजबूरी हो या बहुत ज्यादा दूरी न हो तो भाई-बहन इस त्यौहार को अवश्य साथ मनाते हैं तथा उनका आपसी प्रेम देखकर उनके माता-पिता अत्यंत प्रसन्न होते हैं। इसके पश्चात् श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर भगवान श्रीकृष्ण का श्रृंगार, उपवास, भक्ति की जाती है, एक समय में श्री गणेश उत्सव दस दिनों तक पूरी शिद्दत से मनाया जाता था। भगवान श्री गणेश की आराधना कर दसवें दिन उनका विसर्जन यह त्यौहार धार्मिक होने के साथ सामुदायिक सौहार्द का भी प्रतीक है। सोसायटी, मोहल्ले या कार्यालय के लोग एक साथ मिलकर भगवान श्री गणेश की स्थापना करते हैं ताकि धर्म के साथ उनके बीच सौहार्द भी बढ़ सके।

सोलह श्राद्ध सोलह दिन तक पित्रुओं का त्यौहार ही है। दिवंगत परिजनों की प्रसन्नता एवं पारिवारिक समृद्धि के उद्देश्य से श्राद्धपूर्वक श्राद्ध किया जाता है। नवरात्रि में 'माँ' नवदुर्गा की भक्ति एवं आराधना खासकर कन्याओं को इस पर्व का साल भर इंतजार रहता है, यह भी धर्म के साथ समाज को संगठित करने वाला पर्व है। धर्म एवं संस्कृति को पुष्ट करने का प्रयास है। दशहरा पर रावण दहन, दीपावली पर महालक्ष्मी पूजन इनके पश्चात् परिजनों, रिश्तेदारों, शुभचिंतकों, व्यापार सहयोगियों के बीच मिलन एवं समारोह आयोजित होते हैं, फिर भाई बहनों का एक ओर पर्व भाईदूज। दीपावली का त्यौहार पांच दिन तक मनाया जाता है तथा यह हिन्दुओं का सबसे बड़ा त्यौहार है। आजकल दूरी और मजबूरी का बहाना कर कई भाई-बहन राखी पर एकत्र नहीं हो पा रहे हैं, परन्तु दीपावली के त्यौहार पर सब अवश्य एकत्र होते हैं केवल उन्हें छोड़कर जो विदेशों में है। रक्षा-बंधन से देव उठनी एकादशी तक त्यौहारों का जो सिलसिला है वह मनुष्य को धर्म से, परिवार को आपस में, समुदायों को संगठन से तथा समाजों को संगठन की मजबूती से जोड़ता है।

-संगीता दीपक शर्मा

...मतभेद स्वतः एक ही जाड़म पर क्षाने का वक्त...

वाणी में आपकी टिप्पणी 'मंथन'/'शर्मनाक' एवं श्रीमती रश्मि नागर का विचारशील निवेदन लेख 'शार्टकट' पर गौर व चिन्तन करें तो नागर समाज अपने विकास, अधिकार, जागृति (समय के साथ) रिश्तों, लक्ष्य व सामाजिक अवस्था के प्रति सोच में निस्पृह स्थिति में है ऐसा महसूस होता है।

'मनु' ने कर्म व दायित्व के अनुसार मानव के सुरक्षा, व्यवसाय, शिक्षण, सेवा के उद्देश्य से क्षत्रिय, वैश्य ब्राह्मण, शुद्र ऐसे चार वर्ग बनाये थे। कोई जाति भेद नहीं था। कालान्तर समय चक्र में शनैः-शनैः विचार-बोध व चारित्रिक स्वभाववश जातियों का स्वरूप सामने आता गया। ज्ञानी, विद्वान, शिक्षा-प्रकाण्ड ब्राह्मण वर्ग भी इससे अछूता नहीं रहा। वर्ग-भेद में भिन्नता का स्वरूप बढ़ता गया।

स्वाधीन भारत के भावी स्वरूप की कल्पना का आंकलन करते सर्वजन समानता के उद्देश्य को सामने-रखते आरक्षण सुविधाओं से निम्न वर्ग को समानता के स्तर पर उन्नत करने के सुप्रयास हेतु संविधान सभा ने संविधान में दस वर्ष को समयावधि का आरक्षण प्रावधान रखा। वर्तमान की परिस्थितियों को देखते स्वतंत्रता के सात दशक पूर्ण होने के उपरांत श्री हनुमानजी की पूंछ की तरह 'आरक्षण' समय-वृद्धि के साथ अभी भी विद्यमान है। ऐसा राजनैतिक स्वार्थ व हथकंडों की वजह से हो रहा है। और वे इसे समाप्त करने के पक्ष में नहीं लग रहे हैं।

आरक्षण का मूल माप-दंड जरूरत अथवा सम्पन्नता नहीं है। आज देखा जाए तो आरक्षित वर्ग पूर्व हालत के बनिस्वत बेहतर से बेहतर स्थिति में होते जा रहे हैं। आरक्षित वर्ग एवं श्रेष्ठी वर्ग समानता की मध्य रेखा के नजदीक होते जा रहे हैं। आरक्षण, सुविधाएँ प्राप्ति का शार्टकट है मानकर विभिन्न प्रदेशों में अब अगड़ी जातियाँ भी आरक्षण के लिये आंदोलनरत हैं, इसे आरक्षण की मांग अथवा विरोध का सामूहिक प्रयास भी कह सकते हैं। ब्राह्मण वर्ग भी क्यों न अपना अधिकार जताए? पहल जरूरी है।

ज्ञान-दीप लेकर एक समय ब्राह्मण एकला चलो रे के भांति समाज में अहम व मान्य तुल्य भूमिका निबाहते चल रहे थे। आज ब्राह्मण समाज सरकार व अन्य तरह से उपेक्षा की गिनती गिन रहा वर्ग बनता जा रहा है। उत्सवी शोभा यात्रा एवं अन्य आध्यात्मिक समारोह में ब्राह्मण-गणों की उपस्थितियाँ बहु-संख्यक होने का प्रदर्शन मात्र दर्शन है। अधिकार के प्रति उदासीनता उचित नहीं है। ब्राह्मण समाज को भी अन्य जातियों के समान एक साथ एकजुट

होकर आरक्षण हों या विरोध के प्रति खड़ा होना आवश्यक लगता है। आरक्षण आंदोलन व वर्तमान समग्र परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते आरक्षण के इस जिन्न को हमेशा के लिये बोलत में बंद कर देना ही श्रेयस्कर होगा। आरक्षण के इस अंधकार से समाज के उभरते, होनहार, बौद्धिक शिक्षित युवावर्ग चयन प्रक्रिया में प्रतिबद्ध होते हुए भी अवसर से वंचित हो जाते हैं। यहाँ तक कि पदोन्नतियों में आरक्षण कदम बढ़ा रहा है। डर लगता है कि कहीं सामान्य वर्ग आगे जाकर अल्पसंख्यक न हो जाए।



अन्य समाजों की विकसीत सक्रियता के परिप्रेक्ष्य में नागर समाज में समग्र उत्थान व सक्रियता के उद्भव हेतु यह उदासीनता व विचारशून्यता को जहन से त्यागना आवश्यक है। यह तब ही संभव हो पायेगा जब समाज के भिन्न-भिन्न घटक एकता की जाड़म पर समानता के साथ आ जाए। समाज के काम में कोई भी बड़ा या छोटा नहीं होता है। इस दिशा में प्रत्येक घटक पहले विचार करें। उदासीनता व विचार-शून्यता की स्थिति में मंथन संभव नहीं।

नागरों में आत्मिक-विचार उत्पन्न हो। विचारों के साथ उनका आदान-प्रदान हो, विनिमय हो, सहमति-असहमति के साथ विचारों के मंथन पश्चात् सहमति का ध्वज लिये नागर अमृत मंथन का सफर सहयोग साथी हाथ बढ़ाना की भावना लिये आगे बढ़ता जाये।

-पी.आर. जोशी

528, उषा नगर, एक्स. इन्दौर

अपनी खुद की गलतियों पर हंसना
आपकी उम्र बढ़ा सकती है।

- शेक्सपियर



अपनी बीवी की गलतियों पर हंसना
आपकी उम्र घटा भी सकता है।

- शेक्सपियर की बीवी

60 साल में पहली बार अ.भा. महिला अध्यक्ष



अखिल भारतीय नागर परिषद् के 21 वे सत्र में महिला अध्यक्ष के रूप में श्रीमती वीणाबेन चम्पक भाई जोशी ने बहुमत से विजयी होकर एक रेकार्ड बनाया है। 60 वर्ष में पहला मौका है जब कोई महिला इस पद पर काबिज हुई है। वर्तमान में इस गौरव को पाने हेतु गुजरात की विभिन्न इकाईयों में श्रीमती वीणाबेन का सम्मान किया जा रहा है। साथ ही देशभर में परिषद् की इकाईयों को सक्रिय एवं प्रभावी बनाने का संकल्प लिया गया है।

बूंदी में श्रावण उत्सव



बूंदी में श्रावण मास के प्रत्येक सोमवार और प्रदोष के अवसर पर हाटकेश्वर भवन में भगवान हाटकेश्वर का भव्य श्रृंगार किया गया। समाज के उपाध्यक्ष पीयूष 'पाचक' (मेहता) ने बताया कि प्रत्येक आयोजन में कुसुम मेहता, वंदना सुशील मेहता, हेमा मेहता, निशा मेहता सहित समाज की महिलाओं ने भजनों की मनोहारी प्रस्तुतियाँ दी। इन आयोजनों में अध्यक्ष सुशीलकांत मेहता, सचिव प्रदीप ठाकौर, जयलाल ठाकौर, रवि ठाकौर, मुकेश ठाकौर, सहित समाज बंधुओं ने सामूहिक आरती व प्रसादी वितरण में भाग लिया। -आयुष दत्त मेहता



हाटकेश्वर मंदिर में श्रावण उत्सव

लखनऊ के श्री हाटकेश्वरनाथ मंदिर में सावन के चारों सोमवार को श्रृंगार एवं पूजन का आयोजन किया गया। शहर के अनेक नागरजनों ने इस उत्सव को पूरे उत्साह से मनाया। श्रृंगार एवं प्रसाद की व्यवस्था सभी नागरजनों द्वारा की गई।

प्रेषक- राम व्यास, लखनऊ

सखियों ने सावन मनाया



कोलकाता की सखियों ने डोबसन लेन हावडा में सावन उत्सव मनाया। सभी सखियाँ हरे रंग के परिधानों में सज-संवरकर आई थी। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो सावन की सारी हरियाली एक साथ खुशनुमा माहौल के साथ आ गई है। सखी अंजली झा ने योगाभ्यास करवाया, विभिन्न तरह के योग सिखाए जिन्हें हम प्रतिदिन आसानी से कर सकते हैं। इसके बाद सावन के गीतों की बारी आई। सभी को पर्चियाँ दी गईं, उसमें अंकित रिमझिम फुहारों के गीतों का आनन्द उठाया, सारा वातावरण हर्षोल्लास पूर्ण था। साथ ही नियमित गतिविधियों पर भी चर्चा हुई। सखी शीला दवे जो सावन में सबसे सुन्दर श्रृंगार करके आई थी उन्हें पुरस्कार दिया गया। अंत में सभी ने कचोरी चाट, मिठाई का चाय के साथ आनन्द लिया। नई ऊर्जा के साथ सखी सभा का समापन हुआ।

-अणिमा दीप याज्ञिक बागुईहाटी, कोलकाता मो. 9831724829

श्रावण मास के साथ त्यौहारों की झड़ी

श्रावण मास के आगमन के साथ ही वर्ष ऋतु और बारिश की ही नहीं त्यौहारों की भी झड़ी लग जाती है और नागर जनों का उत्साह अपनी चरम सीमा को पार करने लगता है। अपनी-अपनी श्रद्धा और सामर्थ्य के हिसाब से भजन कीर्तन से सभी देवालय आस्था से सराबोर हो जाते हैं।

श्री गोवर्द्धननाथजी का मंदिर तो विगत दो वर्षों से घंटे-दो-घंटे का हरे कृष्ण हरे कृष्ण संकीर्तन का केन्द्र बना हुआ है। परन्तु श्रावण मास में समय बढ़ जाता है। 14 अगस्त का श्री भगवती मंडल के स्वर्ण महोत्सव (50 वर्ष) के प्रथम कार्यक्रम की शुरुआत नवनिर्वाचित

अध्यक्ष श्री मधुसुदन झा के नेतृत्व में ऊँची पहाड़ी पर स्थित सोमाई माता मंदिर में चंडी पाठ के साथ की गई। यह कार्यक्रम अध्यात्म के साथ प्राकृतिक सौन्दर्य को निहारने एवं पर्वतारोहण का आनन्द भी देता है। परन्तु वडिल सदस्यों की सुविधा के लिए भण्डारिया हनुमान मंदिर की यज्ञशाला में (जो तलहटी में स्थित है) आयोजन रखा गया। हाटकेश्वर मंदिर में ॐ नमः शिवाय का



गुंजायमान होता है, तो अन्य मंदिरों में संत नरसी और संत दुर्लभराम के राम और कृष्ण की आराधना होती है। श्रावण शुक्ल अष्टमी (11 अगस्त) से श्रावण शु. पूर्णिमा (18 अगस्त) तक श्रीजी मंदिर गोवर्द्धननाथ मंदिर, संत केशवाश्रम और संत दुर्लभरामजी के मंदिरों में श्रावण के झूलों में बालगोपाल कृष्ण को झुलाया जाता है और भजन संध्या आयोजित की जाती है। पूर्णिमा के दिन बाल्यावस्था को पारकर युवावस्था की आराधना के अंतर्गत होली गीतों में प्रवेश किया जाता है तथा यही आयोजन का आनंददायक पल होता है। नागर समाज अन्य पर्वों की तरह श्रावणी उपाकर्म, ऋषि

तर्पण को भी अपने संस्कारों का अहम हिस्सा मानते हैं। सभी नागरबंधु अपने वेद (सामवेद, यजुर्वेद, ऋग्वेद और अथर्ववेद) और गौत्र के ऋषियों को आधार मानकर स्वयं की शुद्धि और मोक्ष प्राप्ति के लिए ऋषि तर्पण करते हैं।

सामान्यतः यज्ञोपवीत धारण करने वाला प्रत्येक नागर बंधु इस विधि को सम्पन्न करने का पात्र है। पहले किसी नदी या किसी घाट पर हैमाद्री स्नान, पंचगव्य स्नान, पितृतर्पण विधि सम्पन्न की जाती रही है, परन्तु जलाभाव में यह आयोजन हमारे देवालयों में सम्पन्न होने लगे हैं। स्नान तर्पण के बाद पंचाक्षर मंत्रों से भी पूजा होती है

तथा विधि विधान के साथ नई जनेऊ धारण कर पुरानी को विसर्जित किया जाता है। साथ ही रक्षासूत्र बांधने का कार्य सम्पन्न किया जाता है। इसके बाद कजली तीज पर कुंवारी कन्याएँ उपवास रखती हैं। वडिलों के आशीर्वाद लेकर श्री ज्वालामुखी मंदिर प्रांगण में एकत्रित होते हैं उत्साह और उमंग देखते ही बनते हैं। जन्माष्टमी के पश्चात् भादवी चतुर्दशी बांसवाड़ा नागर समाज में माताजी के उत्सव के रूप में

मनाया जाता है। जिसमें हर घर में दूधपाक (खीर) पांच सब्जी और मिठाईयों का नैवेद्य लगाया जाता है। गणेश चतुर्थी तथा उसी दिन से आद्यशक्ति जगदम्बा से साक्षात्कार के उद्देश्य से भादवी पूनम पर आयोजित अंबाजी मेले हेतु पदयात्रा की तैयारियाँ भी अभी से आरम्भ हो चुकी है। सबका उद्देश्य यही है कि जो भी काम करो उत्साह तथा समर्पण के साथ करो, बाबा हाटकेश्वर और माँ जगदम्बा इस उत्साह के वातावरण को बरकरार रखे, इसी शुभेच्छा के साथ...

-श्रीमती मंजू प्रमोदराय झा
नागरवाड़ा बांसवाड़ा



कजली तीज के दृश्य

टांग खींचकर कहा जाता है चांद को पकड़ो

रियो ओलंपिक में अमेरिका 120 मेडल के साथ टॉप पर रहा। उसने 45 स्वर्ण, 37 रजत और 38 कांस्य पदक पर कब्जा किया। ब्रिटेन 27 स्वर्ण के साथ 67 पदक लेकर दूसरे तथा चीन 26 स्वर्ण के साथ 70 पदकों का विजेता बना। भारत की पी.पी. सिंधू बेडमिंटन ने रजत पदक और साक्षी मलिक ने कुश्ती में कांस्य पदक प्राप्त कर देश को गौरवान्वित किया। जिम्नास्ट दीपा कर्माकर भी पदक प्राप्त न होने के बावजूद सम्मान की अधिकारी बनी, उनके कोच गोपीचंद के भी आभारी हैं, कि उनका परिश्रम रंग लाया।

चीन में खेलों के प्रति रुझान देखकर बाल्यावस्था से ही कैसी तैयारी कराई जाती है, टीवी पर उसे देखकर आश्चर्य जनक लगता है, मगर भारत में वैसा करना अमानवीय कृत्य कहा जा सकता है। वैसे भारतीय खेल कबड्डी और गोविंदा (मटकी फोड़) ओलंपिक की परिधी में नहीं आते, क्योंकि विश्व में ये खेल मान्य नहीं हैं। हमारी कोर्ट ने कहा कि 18 साल से कम उम्र के गोविन्दा नहीं बन सकेंगे और 20 मीटर से ऊंची मटकी बांधना गैर कानूनी होगा। पोथी पढ़-पढ़ जग हुआ, पंडित भया न कोय... ऐसे आदेश क्या देश में ओलंपियन्स बनने देंगे। लाखों केस पेंडिंग पड़े हैं, परन्तु उनकी चिंता कुछ विघ्न संतोषी, मानवतावादियों के प्रति ज्यादा है।

सिंधु-साक्षी और दीपा के माता-पिता ने यह सोचकर कि उनकी कच्ची उम्र में बोझ न

डालें तो क्या वे यह मुकाम हांसिल कर देश को गौरव दिलवा सकती थी। जमेका के उसेन बोल्ट में बीजिंग, लंदन और रियो में तीन-तीन स्वर्ण के साथ कई पदकों पर विजय हांसिल कर ओलंपिक को अलविदा कहा, पांच गोल्ड जीतने वाली अमेरिका की महिला एथलीट केलिक्स की भी यही कहानी है। पी.टी. उषा ने उडनपरी की प्रसिद्धि पाई मगर वो उम्र की बाधा के कारण आगे नहीं बढ़ पाई।

बुधिया दौड़ना चाहता है वह अच्छा धावक बन सकता है, मगर उसका कोच लाचार है उसे कानूनी प्रावधानों का भय है। एक-एक खिलाड़ी ही कई स्वर्ण, रजत ला सकते हैं, परन्तु बुधिया जैसी प्रतिभाओं पर बंदिशें

और वृक्षारोपण की तस्वीरें मीडिया और समाचार जगत को मिल गई तो उसे बालकों का शोषण प्रचारित कर दिया जाता है।

अभी लखनऊ से समाचार आ रहे हैं कि चार साल सात माह की बच्ची अनन्या को नौवी कक्षा में एडमिशन दिया गया है, उसकी बहन सुषमा भी सबसे कम उम्र में मास्टर ऑफ साईस की डिग्री हांसिल कर चुकी है, परन्तु आम भारतीयों के लिए 14 वर्ष पूर्व 10वीं बोर्ड की परीक्षा में बैठना कानूनन अपराध बन जाता है। कुछ वर्षों पूर्व मीडिया में 22 माह के दूधमुंहे बच्चे के कम्प्यूटर चलाने के समाचार आ रहे थे तो गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रेकार्ड वाले

रियो ओलंपिक (मे डल) पश्चार्मेश



अधिकारियों ने उसे अन्य माता-पिता पर दबाव बनाया जाना निरूपित कर दिया था। अब तो जानवरों को प्रशिक्षित करना भी कुआलिटी टू एनीमल में आ गया है और सभी सर्कस बंद होने की कगार पर पहुँच गए हैं। भारत में इनोवेशन कुआलिटी है, परन्तु विकसित देश सब कुछ करने हेतु स्वतंत्र हैं। इसलिए यदि आगे बढ़ना है तो किसी देश के पिछलगू नहीं बनें, खेल संघों की आपसी खींचतान रोकना होगी तथा जरूरी लगे तो ओलंपिक आयोजन से पूर्व भारत में ही ऐसी प्रतियोगिता करके खिलाड़ियों का चयन किया जाना सही कदम हो सकता है।

-प्रमोदराय झा
नागरवाड़ा, बांसवाड़ा

हैं, सभी विकसित देश अमेरिका, ब्रिटेन चीन, जर्मनी रूस अपने देश में सब हथकंडे अपनाते हैं मगर जब दूसरे देश उनका अनुसरण करने लगते हैं तो उन पर पाबंदी लगा दी जाती है। भारतीय कुश्ती संघ की ऐसी ही खींचतान नरसिंह के प्रयासों को धूल चटा गई। हम भारतीय न तो विदेशी कारगुजारियों को पूर्ण रूप से अपनाते हैं ना ही भारतीय संस्कृति से जुड़ पाते हैं। अगर विद्यालयों में स्वच्छता अभियान चला दिया



शादीशुदा अंटी:- पंडित जी मेरे पति हमेशा मुझसे लड़ते रहते हैं! घर की सुख शांति के लिए कौन सा वत रखूँ ?

पंडित जी :-
मौन वत रखो
बेटा सब बढ़िया होगा!

व्यंजन प्रतियोगिता एवं बोन्साई कार्यशाला सम्पन्न

नागर महिला मण्डल की जुलाई माह की बैठक में श्रीमती रेखा पंडित ख्यात पाक विशेषज्ञ ने समय एवं मौसम अनुसार पौष्टिक विधियाँ व उपकरणों का प्रदर्शन, प्रशिक्षण दिया। सभी सदस्यों ने नई विधियाँ सीखी व उनसे टिप्स लिए मिश्रित अनाज की ब्रेड बनाना व किवी की डिशेज को सबने सराहा। उन्होंने व्यंजन प्रतियोगिता की निर्णायक की भूमिका भी निभाई। जिसमें प्रथम भक्ति शर्मा ने किनोवा नाम के अनाज का प्रयोग एवं गुण समझाये, उनकी रेसिपी का नाम है किन्वा पेटिस, अनाज की ब्रेड, भुट्टे के व्यंजन, मोरधन के कटलेट, खीर। सभी प्रतियोगियों को विशेष अतिथि ने पुरस्कृत किया।



27 अगस्त को आयोजित बैठक में मौसम के अनुरूप किचन गार्डन, फूल, सब्जी उगाने के लिए बीज व नीम खाद, केचूए का खाद (वर्मिकल्चर) की चर्चा की गई तथा उसका प्रदर्शन भी किया गया। श्रीमती उषा दवे के विशेष सहयोग से विशेषज्ञ द्वारा बोन्साई का उद्देश्य एवं लाभ बताए गए। साथ ही जिज्ञासाओं का समाधान किया गया। श्री हरीशजी ने तुलसी, बरगद फायकस व फलों

के बड़े वृक्षों को छोटे गमले, छोटे मकानों में कैसे लगाएँ व उन्हें फलते-फूलते देखें यह प्रत्यक्ष प्रदर्शित किया। बोन्साई वृक्षों की जरूरत पर भी उन्होंने प्रकाश डाला। सभी सदस्यों ने देखा एवं सराहा।

अध्यक्ष- श्रीमती शारदा मंडलोई
सचिव- श्रीमती सोनिया मंडलोई

आगामी बैठक 8 सितम्बर को

नागर महिला मंडल की आगामी बैठक गणेशोत्सव के दौरान होने से श्री गणेश अथर्वशीर्ष पाठ एवं व्याख्या व गायन, किचन के साथ मोदक लड्डू (सभी प्रकार के) की प्रतियोगिता आयोजित है, सभी से अनुरोध है कि सभी सदस्य एक दूसरे तक सूचना का आदान-प्रदान करें एवं समय पर एकत्रित हो कर आनन्द लें। बैठक संयोजक- श्रीमती मीना त्रिवेदी, श्रीमती शारदा मंडलोई, डॉ. रेणुका मेहता।

संगीतमय रामकथा सम्पन्न

सुखदेव नगर स्थित पंचावाटी हनुमान मंदिर में पं. विनोद रामप्रसादजी नागर ने प्रथम संगीतमय रामकथा 7 से



15 अगस्त 2016 तक सम्पन्न हुई। क्षेत्र के श्रद्धालुजन बड़ी मात्रा में उपस्थित हुए तथा कथा का लाभ लिया।

पं. विनोद नागरजी की आगामी संगीतमय रामकथा धार जिले के ग्राम पटलावद (धामनोद) में 8 सितम्बर से 16 सितम्बर तक प्रतिदिन 12 से 3 बजे तक रहेगी।

सम्पर्क- 9977777531

Smoothie स्मूदी : मधुमेह (डायबिटीज) से मुक्ति

विधि- 8 या 10 - पालक के पत्ते, 1 या 2 - पान के पत्ते, 5 या 6 - तुलसी के पत्ते, 5 या 6 - पोदीना के पत्ते, आधा नींबू या आँवला, आधा - सेवफल या नाशपाती या केला, 5 या 6 कड़ी पत्ता (मीठा नीम)

सब अच्छी तरह धोकर आधा कप पानी के साथ मिक्सी में बारीक पीस लें। सुबह चाय के पहले पीना है। स्वाद के लिये काला नमक, जीरा पावडर, गरम मसाला जो चाहे डाल सकते हैं।

एक माह नियमित लें, चेक कराये, मधुमेह, डायबिटीज से निजात पायें। फिटनेस के लिये सभी ले सकते हैं।

-भक्ति शर्मा

49, कैलाश पार्क कॉलोनी, गीता भवन, इन्दौर मो. 9630309107

**हैंडसेक की जगह,
हाथ जोड़कर प्रणाम
करना ही श्रेष्ठ है।
भारतीय संस्कृति को
अपनाकर स्वाईन फ्लू को
दूर रखना ही बेस्ट है।**




आयुर्वेद चिकित्सकों को सिंहस्थ सम्मान

महाकाल की नगरी में इसी वर्ष सम्पन्न हुए सिंहस्थ के सफल सुखद आयोजन के फलस्वरूप उज्जैन के समस्त शासकीय अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने 3 से 6 माह तक 24 घंटे बगैर किसी अवकाश के कर्तव्य निर्वहन किया। शासकीय आयुर्वेद महाविद्यालय के चिकित्सकों ने भी उज्जैन के अनेक चिकित्सा अधिकारियों के साथ 21 चिकित्सा केन्द्रों पर श्रद्धालुओं का आयुर्वेद पद्धति से उपचार किया।



शासकीय आयुर्वेद महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. जे. पी. चौरसिया के अध्यक्षीय नियंत्रण में सिंहस्थ की समस्त आयुर्वेद सेवाएं निर्विघ्न सम्पन्न हुईं। सिंहस्थ सेवा सम्मान एवं सिंहस्थ सेवा पदक वितरण हेतु शासकीय आयुर्वेद महाविद्यालय मंगलनाथ रोड़ पर 15 अगस्त 2016 को अपरान्ह 2 बजे कार्यक्रम का आयोजन हुआ। उक्त कार्यक्रम नगर निगम सभापति श्री सोनू गेहलोत की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। जिसमें सभी अधिकारियों कर्मचारियों को सम्मान एवं पदक वितरित किए गए। चित्र- इस अवसर पर डॉ. प्रकाश जोशी का सम्मान करते उज्जैन नगर निगम सभापति श्री सोनू गेहलोत।



डॉ. आर. एस. नागर प्रदेश प्रभारी नियुक्त

सत्यमेव जयते। टू एंड वेलफेअर सोसायटी भ्रष्टाचार निरोधक हेतु कार्यरत शाखा देवास जिले के प्रदेश प्रभारी डॉ. आर. एस. नागर (बाड़ोली) चुने गए हैं। मो. 9926526947

डॉ. प्रदीप व्यास मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी बने



हम सबके लिए गौरव का क्षण है कि उज्जैन नगर ब्राह्मण परिषद के अध्यक्ष एवं म. प्र. नागर ब्राह्मण परिषद के संरक्षक, वरिष्ठ चिकित्सक एवं प्रसिद्ध नेत्ररोग विशेषज्ञ आदरणीय डॉ. प्रदीप व्यास को उज्जैन जिले के मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी (C.M.O.) नियुक्त किया गया है। उनकी नवीन पदस्थापना पर पूरे समाज को गौरव है। डॉ. व्यास को इस नवीन महत्वपूर्ण उपलब्धि पर सभी समाजजनों एवं परिषद की सभी शाखाओं की ओर से बहुत-बहुत बधाई एवं मंगलमय कामनाएँ।

मानवसेवा एवं समाजसेवा के यज्ञ हेतु जय हाटकेश वाणी परिवार भी डॉक्टर साहब को बधाई प्रेषित करता है।

दो वर्षीय विख्यात ने किया मोहित

लखनऊ के श्रीमती पूर्णिमा एवं श्री मैदन मोहन नागर के पौत्र श्रीमती राति एवं श्री तुषार



नागर के दो वर्षीय पुत्र विख्यात ने एक कार्यक्रम में ड्रम इन्स्ट्रूमेंट बजाकर सभी उपस्थित दर्शकों का मन मोह लिया।

शांतम को सुयश

शांतम याज़िक ने अमृता इंटर युनिवर्सिटी स्वीमिंग काम्पिटीशन में एक गोल्ड, तीन सिल्वर एवं एक ब्रॉज मेडल प्राप्त कर समाज को गौरवान्वित किया।



नृत्यांगना श्रीमती विधि नागर ने प्रतियोगिता जीती

लखनऊ निवासी नृत्यांगना श्रीमती विधि नागर जो वर्तमान में बनारस हिन्दू विश्व विद्यालय में कथक की प्रशिक्षिका हैं, आप कथक को लेकर नई पीढ़ी तैयार कर रही हैं, आपने गृह नगर लखनऊ में आयोजित नृत्य प्रतियोगिता में जीत हांसिल की।



बधाई

एक आदमी - भैया बाल छोटे कर दो।

नाई - कितने छोटे

कर दूँ साहब ?

आदमी - इतने

कर दो कि वीवी

के हाथों में

वा आ सके।



पति रेडियो पर बिजी था।

पत्नी- आप क्या सुन रहे हो?

पति- मोदीजी के 'मन की बात'।

पत्नी- मेरी तो कभी नहीं सुनते हैं आप?

पति- तुम जो कहती हो उसे 'मन की बात' नहीं.... 'मन की भड़ाम' कहते हैं....।



आस्था तमिश दशोरा - 4 सितम्बर
अर्पण प्रमोदराय झा - 9 सितम्बर
प्रमोदराय झा - 23 सितम्बर
भुआ, मामा और नानाजी का जन्मदिन
का प्रणाम और शुभकामनाएँ
प्रेषक- ध्वज अभिलाषा अमित त्रिवेदी



मधुर वचन है औषधी

संत कबीर के दोहे
मधुर वचन है औषधी,
कटुक वचन है तीर।
श्रवण द्वार हवे संचरे,
शालै सकल शरीर।
शब्द संतारे बोलिये,
शब्द को हाथ न पांव।
एक शब्द करे औषधि,
एक शब्द करे घाव।
बोली एक अमोल है,
जो कोई बोले जान।
हिये तराजु तोल के,
तब मुख बाहर आन।

तुलसीदासजी
बोल अमोलख बोल है,
बोल सके तो बोल।
पहले भीतर तोल ले,
बाद में मुखड़ा खोल।

अज्ञात
ऐसी बोली बोलिये
मन का आपा खोय।
सुनने को मीठी लगे,
चिंतन दियो पिरोय।

-उषा ठाकोर, मुम्बई
मो. 9833181575

उत्सवी बहारें

श्री सत्येन्द्र रा. नागर उदयपुर 2
सितम्बर, श्री के.एल.शर्मा इन्दौर 13
सितम्बर, श्रीमती विभूति-आशुतोष
जोशी 15 सितम्बर, कु. शिवांश प्रदीप
जाधव इन्दौर 23 सितम्बर, कु.शिवानी
कर्णिक इन्दौर 29 सितम्बर।

शुभाकांक्षी- जोशी, जया, नागर,
त्रिवेदी, जाधव, शरद नागर परिवार
उदयपुर, इन्दौर

-पी.आर.जोशी, इन्दौर

सौ. दीपिका नागर

4 सितम्बर
शुभाकांक्षी- नागर परिवार,
मोती बंगला, देवास
मो. 9827678692



ज्योति नागर को जन्मदिन
15 अगस्त की बधाई

शुभाकांक्षी- शिवकांता
मेहता, राधेश्याम नागर,
राजेश-ज्योति मेहता,
कन्हैयालाल-अलका
मेहता, विवेक मेहता, विशाखा मेहता,
शुभ मेहता (खजराना, बाड़ोली)
मो. 7089077412



सिद्धि रावल

सुपुत्री-प्रीति-धीरज रावल
17 सितम्बर
शुभाकांक्षी- समस्त परिवार
नामली मो. 9098161415



जयंत मेहता - 2 सितम्बर
प्रशान्त शर्मा - 4 सितम्बर
नकुल मेहता, अमेरिका - 11 सितम्बर
दिलीप मेहता, इन्दौर - 13 सितम्बर
राधिका इन्दौर - 28 सितम्बर
प्रेषक- गायत्री मेहता मो. 9407138599

कु. हर्षिता 22 सितम्बर
सुपुत्री-सौ. रीता मोहन शर्मा
शुभाकांक्षी- जितेन्द्र ओमप्रकाश नागर
मोती बंगला, देवास
मो. 9827678692

रुद्राक्ष नागर

सुपुत्र- सोनू सतीष
नागर टिकोन को
जन्मदिन की बधाई
23 अगस्त 2016



दर्शना रावल

सुपुत्री- प्रीति-धीरज रावल
प्रथम जन्मदिन
रावल परिवार, उज्जैन
शर्मा परिवार नामली



अफवाह

लघुकथा

प्यारेलाल जी जरूरतमंद की सहायता करने के लिए प्रसिद्ध थे। उधारीमल की हकीकत उन्हें पता चल गयी थी कि वे रूपये उधार लेकर हजम कर जाते हैं। उधर उधारीमल ने भी कसम खा ली थी कि वह प्यारेलालजी से रुपये उधार ले कर ही मानेगा। एक दिन उधारीमल ने प्यारेलालजी को बीच सड़क पर रोक लिया और अपनी ढेर सारी परेशानियां और संकट बयान कर डाले।

मैं बीस किलोमीटर चल कर आपसे मिलने आया हूँ। आप इस दुनिया के सबसे उदार व्यक्ति हैं। प्यारेलालजी समझ गए कि वह उनसे रूपये उधार मांगेगा। उन्होंने उससे पूछा - क्या तुम इसी रास्ते से वापस जाओगे।

हाँ, उसने कहा- क्या आप मुझे कोई काम सौंपना चाहते हैं?

हाँ, मेहरबानी कर के तुम मेरी उदारता की अफवाह मत फैलाना। कह कर प्यारेलालजी सड़क पार करके उसकी आँखों से ओझल हो गए।

-आशा नागर, सी-12/9, ऋषिनगर, उज्जैन

वैवाहिक (युवक)

खुशाल स्व. योगेन्द्र व्यास

जन्मदिनांक 9-10-1989
समय- 2.40 पी.एम.
शिक्षा- बी.ई. (सिविल) एमटेक
(स्ट्रक्चर्स)



कार्यरत- असिस्टेंट इंचार्ज रुचि रियलिटी
होलिंग्स लिमिटेड, इन्दौर
मो. 09179971123, 09406606817



रोहित ईश्वरी शंकर नागर

जन्मदि. 23-01-1990
समय- 10.28 रात
कद- 5'6", वजन- 65
शिक्षा- एम.कॉम.

कार्यरत- मारुती सुजुकी, कोटा
गौत्र- कश्यप
सम्पर्क- सवाई माधोपुर
मो. 9785542746, 9413401771

शशांक लक्ष्मीशंकर व्यास

जन्मदि. 30-7-1988
समय- 20.40 पी.एम., खंडवा
शिक्षा- एम.बी.ए. मार्केटिंग
कार्यरत- जे.के. व्हाइट सीमेन्ट
सम्पर्क- 9827510566, 9713071843



चन्द्रेश दशोरा (मांगलिक)

जन्मदि. 18-2-1983
शिक्षा- बी.ई., ई.सी.,
एम.बी.ए., आई.टी.
अध्ययनरत

कार्यरत- आय.टी. कम्पनी
सम्पर्क- मो. 9950498597

अनिकेत चमन उपाध्याय

जन्मदि. 31-12-1989
समय- 11.59, 30 ए.एम., इन्दौर
कद- 6 फीट
शिक्षा- बी.ई. (आनर्स) बिट्स,
पिलानी गेट परीक्षा- प्रथम स्थान, एम.बी.ए.
(गोल्ड मेडल)



कार्यरत- एसोसिएट मैनेजर जेन्सर
टेक्नॉलाजी, पुणे, पैकेज- 20 लाख वार्षिक
सम्पर्क- 09425321578, 0731-4005578

विकास हेमन्त त्रिवेदी

जन्मदि. 28-10-1988, उज्जैन
समय- 8.57, कद- 6'2" फुट
शिक्षा- बी.कॉम. (Hon), एम.बी.ए.
कार्यरत- व्यवसाय
सम्पर्क- 9827350403

वैवाहिक (युवती)

तृप्ति दशोरा

जन्मदि. 29-1-1981
शिक्षा- एम.एस.सी. बॉटनी,
एम.बी.ए. एच.आर.नेट
कार्यरत- असिस्टेंट प्रोफेसर
प्रायवेट कॉलेज
मो. 9950498597



पूजा दिनेश नागर

जन्मदि. 30-5-1988
समय- 3 पी.एम.
शिक्षा- एम.बी.ए.
कार्यरत- सेक्टर प्रा.लि.
सम्पर्क- मो. 9827637647, 9977506659

श्रुति उपाध्याय

जन्मदि. 17-7-1987, जावरा
शिक्षा- बी.ई., एम.बी.ए.
(आय.टी.)
गौत्र- कौशल्य (दशोरा नागर)
कार्यरत- सिनीयर ग्राफिक्स
डिजाईनर (एमएनसी मुम्बई)
कार्यरत- असिस्टेंट प्रोफेसर प्रायवेट कॉलेज
सम्पर्क- उज्जैन 9425657994-993



दिल मेरा

दिल मेरा पत्थर तो नहीं है, मोम की तरह पिघलता है।
तुम तो भये निर्मोही मैं तो राहों का बटोही,
आशाएं मेरी जागी है, निराशाएं मेरी भागी है,
तुम क्यों सोये हो जागो, मौसम भी ये बदलता है।

दिल मेरा...

ये दुर्गम राहों के घेरे, ये जनम के हैं फेरे,
हैं फिर भी ये वीराना पन कहाँ गया है दीवानापन?
मन को कितना समझाऊँ, संभाले न क्यूँ संभलता है?

दिल मेरा...

तुम कहाँ चले हो इन राहों से, दूर हुए हो निगाहों से?
पास आने का ये मौसम है, उम्मीद पर दुनिया कायम है
दुखों के महासागर में जीवन करवट ले चलता है

दिल मेरा...

-सुभाष नागर 'भारती'

नागर मेडीकल स्टोर

अकलेरा फोन 07431-272310



माँ से संसार पिता से परिवार

माता-पिता से बढ़कर इस दुनिया में और क्या है? माँ है तो संसार है और पिता है तो पूरा घर-परिवार है। माँ के बिना हम रह नहीं सकते और पिता के बिना घर चल नहीं सकता अर्थात् परिवार थम सा जाता है इसलिए दोनों ही अपने परिवार के लिए बराबर होते हैं, कोई छोटा या बड़ा नहीं होता। हम माता-पिता दोनों के बिना नहीं रह सकते। इसलिए सभी अपने माता-पिता से अच्छा व्यवहार करें और उनसे कुछ प्रेरणा आशीर्वाद लें।

-टीशा जितेन्द्र नागर
देवास



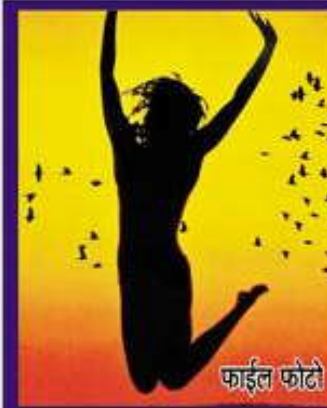
पहले ऐशा होता था...

पहले और अब.... पहले का मतलब चार दशक पहले तक साधनों का अभाव था। मतलब खाद्य एवं भौतिक वस्तुओं का, आय सबकी कम हुआ करती थी, लेकिन आपसी प्रेम का अभाव न था, लोग धर्म से वास्तविक रूप से जुड़े हुए थे, दिखावा नहीं था, कर्ज लेना लोग हराम मानते थे तथा जितनी भी आय होती थी, उसमें से भी बचत किया करते थे। संयुक्त परिवार हुआ करते थे, एक व्यक्ति कमाता और पूरे परिवार को पालता था, उस समय का जिक्र करने का कारण यह है कि संयुक्त परिवार में जब बेटों के यहाँ बच्चे होते थे तब तक दादा-दादी की उम्र सन्यास की हो जाती थी, शास्त्रानुकूल भी 50 वर्ष के पश्चात् गृहस्थ को सन्यास आश्रम में प्रवेश कर जाना चाहिए। दादा-दादी एवं माँ (उस समय गृहिणियाँ नौकरी नहीं करती थी तथा आवश्यकताएँ कम होने की वजह से उन्हें जरूरत भी नहीं थी) बहरहाल दादा-दादी, मम्मी तीन लोगों से बच्चों को संस्कार मिलते थे, स्वाभाविक है कि दादा-दादी मंदिर जाते तो पोते-पोतियों को अपने साथ ले जाते थे, अच्छी बातें भी सिखाते, ऐसी स्थिति में बच्चों को नैतिक, अध्यात्मिक शिक्षा उपयुक्त समय पर मिल जाती थी, साथ ही वे परिवार की आर्थिक स्थिति से भी परिचित रहते तथा उसी अनुसार आचरण करते थे।

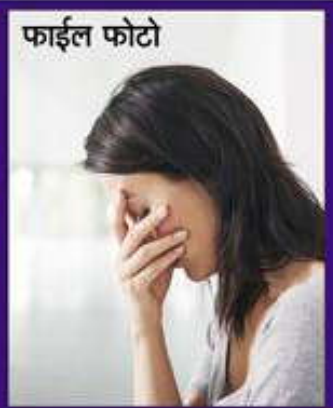
चूँकि पूरा परिवार धर्म से जुड़ा रहता था, तो हर चीज का महत्व था। मेहमानों को भगवान का रूप समझा जाता था, त्यौहारों को बड़े उत्साह से मनाया जाता था। अभाव का जीवन था लेकिन लोग बड़े खुश थे। फालतू की मगजमारी नहीं थी।

अब- भौतिक आवश्यकताएँ बढ़ गई हैं, न धन का अभाव है न वस्तुओं का, लेकिन परिवार एकल हो गए हैं, ज्यादातर जगह पति-पत्नी दोनों नौकरी पर जाते हैं, बच्चों को संस्कार कौन दें?

धर्म एवं अध्यात्म से दूरी बढ़ गई है। पूरा परिवार कमाने जाता है फिर भी सब कर्जे में है। धर्म दिखावे की वस्तु हो गई है, अतिथि का आना खटकने लगा है। त्यौहार बोज़ बन गए हैं। शांति नाम की चीज नहीं है सबके सब भागदौड़ में लगे हैं, जीवन तनावपूर्ण है। जीवन के मायने बदल गए हैं धन कमाने की प्रतिस्पर्धा है, साधन जुटाने में लगे हैं सब लोग, इतना सारा परिवर्तन चार-पांच दशक में आ गया है। पहले अभाव था लेकिन सुख था, आज सब कुछ है तो दुख है। दरअसल हम आज भी सुखी रह सकते हैं- सब चीजें तो हम नहीं बदल सकते, लेकिन जीवन का जो मुख्य लक्ष्य है उस तरफ बढ़कर। वह लक्ष्य है धर्म, शास्त्रों में कहा गया है कि शिशु जब माँ के गर्भ में आता है तो वह उल्टा लटक कर भगवान से उस नर्क से छुटकारा पाने के लिए प्रार्थना करता है कि भगवान मुझे यहाँ से मुक्त कर दो मैं संसार में जाकर आपकी भक्ति करूंगा, नाम स्मरण करूंगा। लेकिन जन्म होते ही वह भगवान से किया गया वादा भूल जाता है, उस वादे को आज याद करने की जरूरत है। प्रत्येक व्यक्ति



फाईल फोटो



फाईल फोटो

कलयुग में भक्ति सबसे आसान है तथा भक्ति के कई प्रकार भगवान ने स्वयं बताए हैं जो आपको पसन्द हो, वह उपाय अपनाएँ तथा पुनः सुखी हो जाए। जिस प्रकार आयुर्वेदिक औषधि का प्रभाव है कि वह रोग को पूर्णतः ठीक करती है। कभी उसका रिएक्शन नहीं होता, वह शरीर को कोई नुकसान नहीं पहुँचाती उसी प्रकार भक्ति का है, उससे मुक्ति तो प्राप्त की ही जा सकती है वह वर्तमान जीवन को भी सुखमय बना सकती है। केवल भगवान की कही बातों को आत्मसात करने की जरूरत है।

श्रीमद् भगवद् गीता में दिए भगवान के निर्देशों का अध्ययन करके फिर से सुखी बन सकता है। शर्त यह है कि धर्मशास्त्रों में कही बातें केवल अध्ययन नहीं की जावे, उनका मनन, चिंतन किया जावे तथा आत्मसात भी किया जावे। कलयुग में भक्ति सबसे आसान है तथा भक्ति के कई प्रकार भगवान ने स्वयं बताए हैं जो आपको पसन्द हो, वह उपाय अपनाएँ तथा पुनः सुखी हो जाए। जिस प्रकार आयुर्वेदिक औषधि का प्रभाव है कि वह रोग को पूर्णतः ठीक करती है। कभी उसका रिएक्शन नहीं होता, वह शरीर को कोई नुकसान नहीं पहुँचाती उसी प्रकार भक्ति का है, उससे मुक्ति तो प्राप्त की ही जा सकती है वह वर्तमान जीवन को भी सुखमय बना सकती है। केवल भगवान की कही बातों को आत्मसात करने की जरूरत है। जीवन में उनका उपयोग करना पड़ेगा। फिर तमाम झंझावतों से मुक्ति की ग्यारंटी है। हम कहते जरूर हैं पहले का समय अच्छा था, महंगाई नहीं थी। प्रेम था, सुकून था वही समय वापस लौटा लाने की शक्ति केवल अध्यात्म में है धर्म में है और कोई उपाय नहीं है।

इस बारे में अपने विचार 25 सितम्बर 2016 तक हमें पहुँचा देवे उन्हें आगामी अंक में प्रकाशित किया जावेगा।

-सम्पादक

हमारी भारतीय संस्कृति में प्रणाम का अत्यधिक महत्व है। प्रणाम प्रक्रिया गहन वैज्ञानिक प्रक्रिया है जिससे प्रणाम करने वाले को चार प्रकार के विशेष लाभ प्राप्त होते हैं अतः कहा गया है -

अभिवादन शीलस्य नित्यं वृद्धोप सेविनः ।

चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयु विद्या यशोबलम् ॥

अर्थात् नित्य शीलतापूर्वक वृद्धों को अभिवादन (प्रणाम) करने एवं सेवा करने से चार चीजों की अभिवृद्धि होती है वह १ आयु २ विद्या ३ यश ४ बल

प्रातः काल उठ कर अपने पूजनीय माता-पिता, गुरु, ब्राह्मण, गाय एवं अपने इष्ट देव आदि को नित्य प्रणाम करना चाहिये। राम चरित मानस में भगवान श्री राम भी अपने माता-पिता, गुरु को प्रणाम करते थे। यथा

प्रातःकाल उठिके रघुनाथा

माता पिता गुरु नायड माथा ।

श्रीमद्भगवत गीता में अध्याय चार के ३४ वे श्लोक में भगवान श्री कृष्ण परम तत्व ज्ञान प्राप्ति के लिए अर्जुन को तत्वदर्शी ज्ञानियों के पास जाने का कहते हुए कहते हैं

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया ।

उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्व दर्शिनः ॥

अध्याय ४ / ३४ श्लोक

अर्थात् हे अर्जुन उस ज्ञान को तू तत्वदर्शी ज्ञानियों के पास जा कर समझ उनको भली-भाँति दण्डवत प्रणाम करने से उनकी सेवा करने से वे तत्व ज्ञानी तुझे उस तत्व ज्ञान का उपदेश करेंगे। इस प्रकार गीता में भी भगवान कृष्ण ने अभिवादन (प्रणाम) को विशेष महत्व दिया है, आज भी गुरु-शिष्य परंपरा अनुसार चाहे संगीत विद्या हो चाहे मल्ल विद्या (कुरती) हो अथवा अभिनय हो यह परंपरा अविरल भारत में बनी हुई है।

महाभारत में द्रुपद क्रीडा में हार जाने के पश्चात जब पांडवों को दुर्योधन द्वारा अपमानित किया गया और संपूर्ण सभा से युधिष्ठिर आदि जाने लगे तब जाते समय युधिष्ठिर ने भीष्म पितामह, धृतराष्ट्र, गुरु द्रोणाचार्य और महामंत्री विदुर को प्रणाम कर और आज्ञा मांग प्रस्थान करने लगे तब गुरु द्रोणाचार्य ने कहा कि यदि

प्रणाम का महत्व

पांडव मुझे प्रणाम कर नहीं जाते तो मैं आज उन्हें श्राप दे देता।

प्रणाम करने की प्रक्रिया इस प्रकार है वैज्ञानिक दृष्टिकोण से जब छोटा व्यक्ति अपने से बड़ों को प्रणाम करता है तो उसे अपने पूज्य के दाहिने चरण को अपने दाहिने हाथ से और बाये चरण को बाये हाथ से स्पर्श करे ऐसा करने से विद्युत प्रवाह की भाँति प्रणाम करने वाले को वह शक्ति प्राप्त होती है। दूसरा जो पूज्य व्यक्ति है वह अभिवादन करने वाले के सिर पर अपना वरद हस्त रखता है। इस प्रक्रिया द्वारा भी पूज्य के हृदय से निकलने वाले उत्तम मनोभाव हस्थ (हाथ) द्वारा प्रणाम करने वाले के मस्तक द्वारा उसके शरीर में प्रविष्ट करते हैं वैसे भी बालों में विद्युत स्रोतों का प्रभाव शीघ्र होता है अतः इस प्रकार यह प्रणाम करने की प्रक्रिया वैज्ञानिक दृष्टि कोण से अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

जब कि आज नवयुवक प्रणाम करने में अपने को हीन समझता है जब प्रणाम, विनम्रता, शीलता यह तो विद्या के गुण हैं। कहा गया है कि

विद्या ददाति विनयम विनयं ददाति पात्रताम्

अतः पात्र बनने के लिए विनय परम आवश्यक है फिर वास्तविकता यह है कि जो प्रणाम करता है उसे ही उपरोक्त चार वस्तुएँ प्राप्त होती हैं। जिसको प्रणाम किया उसे यह लाभ नहीं प्राप्त होता बल्कि कभी कभी उसके पुण्य भी क्षीण हो जाते हैं अतः अनेक संत प्रणाम नहीं करने देते।

इस प्रकार प्रणाम से अनेक लाभ हैं अतः प्रत्येक व्यक्ति को चाहिये कि अपने माता-पिता, गुरु एवं पूज्य के चरण स्पर्श अवश्य करे। कई बार वयोवृद्ध के तो चरण स्पर्श व्यक्ति करता है किन्तु ज्ञान वृद्ध को प्रणाम नहीं करता कम उम्र में ही संत ज्ञानी हो जाते हैं उन्हें ज्ञान वृद्ध कहते हैं उन्हें भी अभिवादन करना चाहिये। दूसरा बाल्य काल से ही अपने बच्चों को प्रणाम करने की प्रवृत्ति सभी को डालनी

चाहिये जिससे वयस्क होने पर भी उन्हें प्रणाम करने में लज्जा महसूस न हो।

प्रणाम के लिए कहा गया है कि प्रातः काल के समय दूसरा शयन के पूर्व अपने माता पिता एवं पूज्य को नित्य प्रणाम करना चाहिये इसके अतिरिक्त कहीं विशेष कार्य से जाना हो अथवा शुभ कार्यों के संपादन पश्चात भी प्रणाम किया जाता है। धर्म ग्रंथों में बताया गया है कि संत तपस्या, पूजा आदि से निवृत्त होते हैं उसी समय प्रणाम करने से उनके तपस्या पूजन का कुछ फल भी प्रणाम करने वाले को प्राप्त होता है।

-डॉ.ओ.पी. नागर,

श्री रामांक, नागर

क्लिनिक,

गोपाल पुरा, मक्सी

रोड़ उज्जैन

मो. 9302222333



जिन्दगी में अपने से बड़ों को 'प्रणाम' करना सीखिए, क्योंकि कहा जाता है कि 'प्रणाम' परिणाम बदल देता है।

" विकल्प "
बहुत हैं बिखरने के लिये!
" संकल्प "
एक ही काफी है संवरने के लिये...!!

गतांक
से आगे...

व्यवसायिक सफलता का राज

रोटरी क्लब में मेरे एक साथी बी.एम. अग्रवाल ने चर्चा के दौरान बताया कि ये जो बोहरा समुदाय है ये नागर ब्राह्मण हुआ करते थे, गुजरात में मुस्लिम शासकों के हमलों के बाद इन्होंने धर्म परिवर्तन कर लिया तथा फिर ये देशभर में फैले। मतलब अन्य जाति के लोग भी यह इतिहास जानते हैं।

पिछले कुछ अंकों से मैं बोहरा समाज एवं हम शीर्षक से लेख श्रृंखला चला रहा हूँ क्या अंतर है हमारे और उनके बीच। कुछ बातें बहुत अच्छी हैं जो हम उनसे सीख सकते हैं। उनके संगठन एवं समृद्धि के जो सूत्र हैं वे वास्तव में अनुसरण योग्य हैं। (बो) बोहरा समुदाय के लोग नौकरी के बजाय व्यवसाय को प्राथमिकता देते हैं अधिकतम लोग व्यवसाय में रत हैं तथा अपनी कमाई का निश्चित हिस्सा एक से डेढ़ फीसदी समाजोत्थान हेतु दान देते हैं।

इनके द्वारा व्यवसाय ही किए जाने तथा व्यवसाय में सफलता प्राप्त किए जाने के कुछ मुख्य कारण हैं। इनके धर्मगुरु का निर्देश है कि वे नौकरी के बजाय व्यवसाय करें तथा व्यवसाय के लिए उन्हें समाज द्वारा बगैर ब्याज का ऋण एवं अन्य सुविधाएं दी जाती हैं। ये लोग मुख्यतः समूह में व्यवसाय करना पसंद करते हैं (जैसे समूह में रहना पसंद करते हैं) इन्दौर का बोहरा बाजार, महारानी रोड़ इसके उदाहरण हैं, अन्य शहरों में भी ये व्यवसाय का स्थल ऐसा चुनते हैं जहाँ बहुत सारी दुकानें एक साथ इनकी ही हो इस तरह व्यवसाय करने से वे



फाईल फोटो

किसी भी परेशानी का मुकाबला मिलकर कर सकते हैं साथ ही व्यवसाय में एक-दूसरे का सहयोग भी करते हैं। गृहिणी एवं बच्चे इन्हें व्यवसाय में भी तरखाने सहयोग करते हैं तथा घर पर कागज की फोल्डिंग, बाईंडिंग, कापी बनाना जैसे घरेलू लघु उद्योग चलाते हैं। इनके परिवारों को व्यवसाय एवं धार्मिक गतिविधियों में बाधा न पड़े उस उद्देश्य से शाम का खाना समाज की ओर से तैयार करवाकर घर-घर भेजा जाता है। समाज में व्यवसायी अधिक होने तथा एक निश्चित दान राशि समाज को भेंट किए जाने से समाज को अच्छी राशि मिलती है जो सामाजिक उत्थान में खर्च की जाती है। पूरा सिस्टम बना हुआ है शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य आदि सब सुनियोजित है, तयशुदा है, उसी अनुसार गतिविधियां चलती हैं। इनका व्यवसाय करना और उसे सफलता पूर्वक करना महत्वपूर्ण है कई व्यापारियों की बड़ी आय है तथा उनकी दानराशि लाखों रुपये

में होती है, परन्तु वे बड़ी खुशी से यह दान राशि देते हैं। उसमें आनाकानी नहीं करते।

(हम) नागर ब्राह्मण समाज में ज्यादातर लोग नौकरी को महत्व देते हैं, इसके पीछे कुछ कारण भी रहे हैं वह यह कि गुजरात से जब ये लोग आए तो अपनी पहचान छुपाने के उद्देश्य से गाँवों में जाकर बसे, चूंकि उनमें बौद्धिक क्षमता थी। अतः शहरों में जाकर विद्याध्यन किया तथा फिर नौकरी से लग गए। अतः पीढ़ी दर पीढ़ी नौकरी ही करते रहे, अंगुली पर गिने जा सकने वाले समाजजन ही व्यवसाय या उद्योग में जा सके।

इस भूल को अब सुधारा जा सकता है तथा बोहरा समाज का इस बारे में अनुसरण किया जा सकता है। नौकरी एवं व्यवसाय दोनों अलग-अलग तरह की मानसिकता का विकास करते हैं। नौकरी में व्यक्ति अपनी आय के हिसाब से सोच समझकर खर्च करता है। जब समाज में कुछ देने की बात आए तो भी उसकी अपनी क्षमता है उससे अधिक वह नहीं दे पाता। नौकरी में ऊपरी कमाई वाले समाजजन दान के मामले में थोड़ी हिम्मत दिखाते हैं, परन्तु सेवानिवृत्त होने के बाद इनसे कोई आशा नहीं की जा सकती। अच्छा खासा धन होने के बावजूद इन्हें अपने स्वयं के भविष्य की चिंता ज्यादा

बोहरा समाज
और
हम

रहती है। नौकरी वाले अपनी क्षमता से यथाशक्ति दान देते हैं, व्यवसायी दिल खोलकर भी दे दे तो उनकी संख्या कम है। सवाल यह है कि क्या धन के अभाव में समाज की गतिविधियाँ चल सकती हैं। लगभग प्रत्येक समाज इकाई की यह समान एवं मुख्य समस्या है। धनाभाव के अलावा उत्साह एवं उपस्थिति की कमी भी एक दूसरा कारण है। धन की कमी को पूरा करने के उद्देश्य से मुम्बई के समाज पदाधिकारी श्री रश्मिभाई ने सुझाव दिया था कि जो समाजजन प्रभावशाली पदों पर हैं, वे अन्य स्थानों से धन एकत्रीकरण में मदद करें, लेकिन यह प्रक्रिया अस्थायी है। इन सभी समस्याओं का हल केवल यही दिखता है कि पहले तो नौकरी हमारी मजबूरी थी, लेकिन अब नहीं है।

अब हम व्यवसाय को प्राथमिकता दें तथा बोहरा समुदाय की तरह पूरा परिवार उसमें सहभागी बनें। धीरे-धीरे समाज संगठन भी इस दिशा में भूमिका निभाए तथा व्यवसाय के लिए सहयोग या कम ब्याज का ऋण उपलब्ध करावे। यह तो तभी सम्भव है जब समाज के पास बड़ी दानराशि वर्तमान कारोबारी उपलब्ध करा सके तथा भविष्य में जो नए व्यवसायी तैयार हो वे समाज संगठन को आर्थिक रूप से सक्षम बनाएं। बोहरा समाज में जो अच्छी बातें हैं वे यहाँ प्रस्तुत कर अपने समाज की उससे तुलना करने का यही कारण है कि हम अन्य सभी समाजों में जो अच्छी बातें हैं उनको लागू करके अपने समाज को समुन्नत एवं समृद्ध बना सकते हैं। (क्रमशः)

-दीपक शर्मा
मो. 9425063129

Fun with English

1. There is no wind in the football.
2. I'll give you clap on your cheeks.
3. Bring your parents & your mothers especially your father.
4. Close the window, airforce is coming.
5. I have two daughters & both are girls.
6. Give me a red pen of any colour.
7. Both of you stand together separatly.
8. Why are you looking at the monkey out side the window when i am here?
9. Can i have some snow in my cold drinks.
10. Don't make noise.....
Principal is rotating in the corridor.

-Pragya Ashit Dixit
Ratlam

Mob.: 9424398952

ज्योतिषी - तुम्हारे जीवन में 6 तडकियां आएंगी ...

तडका - WOW ! क्या बात है ... !!!

ज्योतिषी - ज्यादा खुश होने की जरूरत नहीं है

एक घरवाली और पांच बेटियाँ हैं ... !



अंग्रेज तो चल्या गया..

अंग्रेज तो चल्या गया
जूता चप्पल छोड़ी गया
घर-घर में जूता चप्पल चले
चोका से लगई ने भगवान तक
भगवान से दूसरा के डरावे
खुद भगवान के कोणा में बैठावे
सिर पर से पल्लू उघड़ी गयो
फूल अस्थीन को ब्लाउज
हाफ अस्थीन पर आयो
हाफ अस्थीन से भी घटी गयो
आगे और घटी जाएगो
जमानो बदली ही जाएगो
बच्चा डॉक्टर, वकील, इंजीनियर है
अंग्रेजी भी अच्छी ही बोले है
घर की मर्यादा सड़क पर रखे
माँ-बाप के माँ-बाप नी समझे
रिश्तेदार व पड़ोसी के कई समझेगा
माँ-बाप के वृद्धाश्रम में छोड़े
कुत्ता के कार में घुमाने लई जावे
उसके तो रबड़ी मलई खिलाए
माँ-बाप के आँख बताए, जीभ चलाए
पुराण शास्त्र में माँ-बाप को दर्जो ऊँचो है
कलयुग में माया को दर्जो ऊँचो है।
ठोकर खाता रोता जाएगा
पर अंग्रेज बणता जाएगा
वेद, पुराण, शास्त्र पढ़िया सुणिया
गणपति ने माँ का वचन निभाया
राम ने पिता का वचन निभाया।
तुमने किसका वचन निभाया
अपने गिरेबान में झाँको और सुधरो।

-प्रमोद जोशी

170, गुलाब बाग कॉलोनी, इन्दौर
फोन 3254425

स
ब
क

जरूरी नहीं कि सारे सबक
किताबों से ही सीखें,
कुछ सबक जिंदगी और
रिश्ते भी सीखा देते हैं।

-संकलित- उषा ठाकोर,
मुम्बई मो. 9833181575

प्रत्येक मनुष्य को अपना जीवन यापन करने हेतु तीन महत्वपूर्ण वस्तुओं की आवश्यकता होती है- रोटी, कपड़ा और मकान परन्तु आनन्दमय, उल्लासमय तथा चिंतारहित जीवन जीने के लिये उसे इसके अतिरिक्त कुछ अन्य वस्तुओं की भी आवश्यकता होती है वे हैं- घर, परिवार एवं संस्कार। भौतिक दृष्टि से मकान तथा घर एक ही वस्तु है। सामान्यतः भवन या आवास वह स्थान है जो किसी मानव के निवास के काम आती हो इसके अन्तर्गत साधारण झोपड़ी से लेकर गगनचुम्बी इमारतें शामिल हैं।

प्रायः यह देखा गया है कि व्यक्ति जब अपने आवास या भवन का निर्माण करता है तो उसमें तमाम सुख-सुविधाओं के साधनों का समावेश कर गौरव अनुभव करता है जैसे- सुसज्जित बैठक कक्ष, आकर्षक शयनकक्ष, अत्याधुनिक रसोईघर इत्यादि। सही अर्थों में ये सभी क्षणिक आनन्द की वस्तु हैं अनन्त सुख एवं खुशी तो परिवार के सभी परिजनों के बीच सामंजस्य, आदर, विनम्रतापूर्ण व्यवहार (विशेष रूप से वृद्धजनों के प्रति) के फलस्वरूप ही 'घर' बनता है। अन्यथा वह केवल मकान भवन बन कर रह जाता है। चिंता का विषय है कि जिस पाश्चात्य संस्कृति ने मानव जीवन के अनेक पहलुओं को विकृत किया है उससे घर/परिवार भी अछूता नहीं रहा है। शायद यही कारण है कि जिस गति से नवीन मकानों का निर्माण हो रहा है उससे दूनी गति से 'घर' टूट रहे हैं। जिस प्रकार असंख्य माटी के कण आपस में जुड़कर ईंट का निर्माण करते हैं अनेक ईंट आपस में जुड़कर दीवार का रूप ले लेती हैं।

अनेक दीवारों का मिलन कक्ष में परिवर्तित हो जाता है तथा अनेक कक्ष जुड़कर मकान का स्वरूप ले लेते हैं। उसी प्रकार विचारणीय है कि जब ये निर्जीव वस्तुओं में एकता है तो क्यों? एक ही परिवार के परिजन एक छत के नीचे आपसी सामंजस्य, समभाव, प्रसन्नता से नहीं रह

घर परिवार एवं संस्कार

सकते। पाश्चात्य देशों की संस्कृति के अनुसार पति-पत्नी और आश्रित बच्चों के समूह को परिवार परिभाषित किया गया है, किन्तु दुनिया के अधिकांश भागों में परिवार, सम्मिलित वास वाले रक्त संबंधियों का समूह है, जिसमें विवाह और दत्तक प्रथा द्वारा स्वीकृत व्यक्ति भी सम्मिलित है।

भारतीय संस्कृति के अनुसार सभी संबंधियों का समूह है जिसमें विवाह और दत्तक प्रथा द्वारा स्वीकृत व्यक्ति भी



सम्मिलित है। भारतीय संस्कृति के अनुसार सभी समाजों में बच्चों का जन्म एवं पालन पोषण परिवार में ही होता है। बच्चों को संस्कारित करने तथा समाज के आचार व्यवहार में उन्हें दीक्षित करने का काम मुख्य रूप से परिवार में होता है। इसके द्वारा समाज की सांस्कृतिक विरासत एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित होती है। व्यक्ति की सामाजिक मर्यादा बहुत कुछ परिवार से ही निर्धारित होती है। प्रायः यह देखा गया है कि व्यक्ति का परिचय मुख्यतः उसके परिवार एवं कुल के आधार पर ही होता है।

वर्तमान में व्यक्ति अपनी आर्थिक उन्नति में इतना अधिक खो गया है कि उसे अपने परिवार, विशेषकर बच्चों पर समुचित ध्यान

देने का समय नहीं है। शायद इसी कारण आजकल कुछ परिजन अपने बच्चों के उपेक्षापूर्ण व्यवहार के कारण तनावग्रस्त, कुंठाग्रस्त जीवन जीने के लिये मजबूर हैं। परिवार के परिजनों की आपसी समझ ही संबंधों की कुंजी है। इसलिये कहा गया है कि संबन्ध कार्डियोग्राम की तरह होते हैं उनका ऊपर नीचे होना संबंधों के जीवन्त होने का प्रतीक है। अगर यह सपाट हो तो इसका सीधा सा मतलब है कि संबन्ध अब मृत है इसलिये संबंधों में उतार चढ़ाव को खुले मन से स्वीकार करना चाहिये।

हिन्दू धर्मशास्त्रों में घर-परिवार के बारे में कहा गया है कि-

न गुहं गृहमित्याहुर्गृहिणी गृहमुच्यते।
गृहं हि गृहिणीहीनअरण्य सदृशं मतम् ॥

अर्थात् मकान को घर नहीं कहते हैं, अपितु गृहिणी को ही घर कहते हैं। गृहिणी के बिना घर वन के समान होता है।

गृही गृहस्थो अपि तदश्नुते फलं
यत्तीर्थसेवामिखाप्यते जनैः। तत्तस्य
तीर्थं गृहमेव कीर्तितम् ।

अर्थात् गृहस्थ व्यक्ति अपने घर में ही रहकर वह फल प्राप्त कर लेता है जो लोग तीर्थ सेवा से पाते हैं इसलिये घर ही उसका तीर्थ कहा गया है।

भारतीय संस्कृति का मूलभूत उद्देश्य श्रेष्ठ, संस्कारवान मानव का निर्माण करना है। सामाजिक दृष्टि से भौतिक ऐश्वर्य एवं सुख समृद्धि आवश्यक है, परन्तु मनुष्य के सर्वांगीण विकास एवं सम्पूर्ण जीवन को सुखमय, शांतिमय एवं आनन्दमय बनाने के लिये जिस वस्तु की परम आवश्यकता है वह है 'संस्कार'।

हमारे ऋषि मुनियों ने भौतिक उन्नति से कहीं अधिक महत्व दिया है 'आध्यात्मिक ज्ञान' को, जिसके द्वारा मनुष्य अपने जीवन को सार्थक कर सकता है। आध्यात्मिक ज्ञान की पहली कड़ी है- संस्कार। संस्कारों से व्यक्ति के मन में विकार नष्ट होते हैं तथा व्यक्तित्व प्रभावशाली और जीवन आनन्दपूर्ण बनता है। संस्कार मनशोधन की प्रक्रिया है। गौतम धर्मसूत्र के अनुसार मानव मन से दोष

हटने तथा गुणों की वृद्धि होने वाली क्रिया को संस्कार कहते हैं। 'शंकराचार्य के अनुसार व्यक्ति के गुणों का आरोपण करने अथवा उसके दोषों को दूर करने के लिये जो कर्म किया जाता है- उसे संस्कार कहते हैं। हिन्दूशास्त्रों में कहा गया है कि जन्म से सभी शुद्ध होते हैं, लेकिन संस्कारों के द्वारा व्यक्ति को द्विज बनाया जाता है। पूर्वजन्म के संचित संस्कारों को 'प्रारब्ध' कहा जाता है तथा वर्तमान जीवन में किये जाने वाले कर्मों को 'पुरुषार्थ' कहा जाता है। प्रारब्ध से पुरुषार्थ ज्यादा प्रबल होता है। जिसमें नवीन शुभ संस्कारों को स्थापित किया जा सकता है।

आजकल समाचार माध्यमों में मानववुंठठा, आर्थिक त्रस्तता, पारिवारिक कलह से संबंधित समाचारों की प्रमुखता परीलक्षित होती है इसका मूल कारण उन संस्कारों की कमी है, जिसके कारण व्यक्ति में सदाचार, सुआचरण तथा विषम परिस्थितियों में संघर्ष की भावना जाग्रत करने की शिक्षा प्राप्त होती है। वर्तमान में संयुक्त परिवार का एकल परिवार के रूप में परिवर्तन होना भी कुछ हद तक इस बात के लिये जिम्मेदार है। प्रत्येक माता-पिता का यह कर्तव्य है कि अनेक व्यस्तताओं के बावजूद उन्हें कुछ समय अपने बच्चों को सुसंस्कारित करने का समय निकालना चाहिये, क्योंकि संतानें अपने माता-पिता का प्रतिबिम्ब होती हैं तथा संस्कारों की पूंजी जीवन की हर अवस्था में काम आती है।

एक छोटे बच्चे को बचपन में उपहार न मिले तो वह रोता है, परन्तु संस्कार न मिले तो वह जीवन भर रोता है। जिस प्रकार खदानों से प्राप्त हीरा जो कि कोयले का ही एक प्रतिरूप होता है, परन्तु मूल्यवान रूप में हम तक पहुँचने के पूर्व सर्वप्रथम उसमें उपस्थित अशुद्धियों को हटाया जाता है, तत्पश्चात् उसका परिशोधन तदुपरान्त उसको तराश कर अन्त में

चमकाया जाता है। तब कहीं जाकर वह मूल्यवान रत्न में परिवर्तित होता है, उसी प्रकार प्रत्येक मानव जन्म से शुद्ध होता है। वह विभिन्न संस्कारों द्वारा परिशोधन पश्चात् ही सही मनुष्य बनता है।

संस्कारों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है- (1) वे संस्कार जो कि नैतिक तथा मानवीय मूल्यों पर आधारित हैं तथा (2) वे संस्कार जो आध्यात्मिक धार्मिक तथा सामाजिक परिवेश से संबंधित हैं। पहले प्रकार के संस्कार हर व्यक्ति के लिये न केवल महत्वपूर्ण हैं वरन् आवश्यक हैं चाहे वह किसी भी वर्ण/जाति का हो। ये व्यक्ति के आचरण एवं चरित्र का निर्माण करते हैं। दूसरे प्रकार के संस्कार जाति/वर्ण/सम्प्रदाय अनुसार भिन्न-भिन्न होते हैं। हिन्दू धर्म में इन संस्कारों की संख्या अलग-अलग विद्वानों ने भिन्न-भिन्न बताई है। गौतम स्मृति में 40, महर्षि अंगीरा ने 25, तथा महर्षि वेद व्यास ने अपने ग्रंथ व्यास स्मृति में 16 संस्कारों का उल्लेख किया है। वर्तमान समय की भाग-दौड़ वाली जिन्दगी तथा सांसारिक व्यस्तता ने व्यक्तियों को इने गिने संस्कारों तक सीमित कर दिया है, जिनमें प्रमुख हैं- मुण्डन, संस्कार, यज्ञोपवीत संस्कार, विवाह संस्कार तथा अंतिम संस्कार। बदलते सामाजिक परिवेश के कारण इन संस्कारों का स्वरूप भी, शिक्षा, चरित्र-ज्ञान से कहीं अधिक लौकिक हो गया है।

उपवर्णित आलेख का सारांश यही है कि संस्कारों की सरिता का संगम परिवार की धरोहर है तथा परिवार के परिजनों का प्रेम घर की बुनियाद है। अतः घर, परिवार तथा संस्कार एक दूजे के पर्याय हैं, इनका सामन्जस्य ही सही अर्थों में आनन्द है।

-प्रो. राजेन्द्र नागर (मुमुक्षु)

बी-40, चन्द्र नगर, (एम.आर.9), इन्दौर

धूमधाम से निकाली गई बाबा हाटकेश्वर की सवारी

श्रावण मास की बिदाई एवं रक्षाबंधन के पवित्र संयोग में जब बाबा हाटकेश्वर नाथ टिकोन की जनता का हाल जानने बैड-बाजे के साथ निकले तो शोभायात्रा में गाँव तथा आसपास से पधारें नागरजनों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

महिलाएँ केशरिया साड़ी तथा पुरुष वर्ग धोती कुर्ता पहनकर सवारी में चल रहे थे। जगह-जगह सवारी का स्वागत हुआ। राजा इन्द्र भी वर्षा के माध्यम से स्वागत कर रहे थे। नगर भ्रमण के बाद सवारी मंदिर पहुँची वहाँ रुद्राभिषेक के साथ महाआरती हुई, प्रसाद वितरण हुआ। इस अलौकिक पर्व पर नागर समाज के दुर्गाशंकर नागर, महेश नागर, जानकीलाल नागर, बाबूलाल नागर, संजय नागर, सतीश नागर, विजय नागर, सुरेश नागर आदि का विशेष सहयोग रहा। -प्रेषक कल्पनारानी नागर

वीरजनों की गाथाएँ

वीरजनों की गाथाएं
हवाएं हरदम गाती हैं
समस्त देशवासियों के मन में
श्रद्धा के भाव जगाती हैं।
तिरंगे रंग का आँचल
भारत माँ का तेज है
इस आँचल की रक्षा हेतु
हम सदा प्रस्तुत हैं।
हर जन हर मन
देश के लिये जिये मरे
इस भावना का संचार
हर मन में हम करे।
देश के वैभव को
हम निरंतर आगे बढ़ायें
स्वतंत्रता दिवस के अवसर
प्रण-गान गाये हम।

जय भारत

-वंदिता

पितरों से आशीष पाने का पक्ष: श्राद्ध-पक्ष

पुराणों में तथा धर्मसिन्धु आदि धर्मग्रन्थों में श्राद्धकर्म को अति महत्वपूर्ण बतलाया है। साथ ही अपने पितरों को सुमधुर खीर एवं स्वादिष्ट पकवानों से तृप्त करने पर पितृ-गण अपनी सन्तान को दीर्घायु, आरोग्य एवं धन-धान्य से परिपूर्ण हो जाने का आशीष देते हैं। शास्त्रों की ऐसी भी मान्यता है कि पितर देवताओं से भी अधिक प्रबल होते हैं और वे तृप्त होने पर अपने पुत्र-पौत्रों को अनेक शुभाशीर्वाद देकर पितर लोक को लौट जाते हैं।

शास्त्रों की ऐसी फलदायी धारणा से आस्तिकजन अपने पितरों का श्राद्ध अति श्रद्धा से करते हैं, क्योंकि जब श्रद्धा हो तभी श्राद्ध करना चाहिये 'श्रद्धा यत्र विद्यते तत् श्राद्धम् ।' जब श्राद्ध कर्म करने की इतनी प्रबल आस्था होती है तब सहसा यह जिज्ञासा बन जाती है कि श्राद्ध कर्म कब करना चाहिए तथा कैसे करना चाहिए। इसके लिए पुराणों में विशद उल्लेख है कि भाद्रपद माह में सूर्यदेव के कन्याराशि में स्थित होने पर प्रतिपदा से अमावस्या तक श्राद्ध-पक्ष कहलाता है और इसे 'महालय' श्राद्ध भी कहते हैं। इन पन्द्रह दिनों में अपने माता-पिता, भाई-बन्धु की जिस तिथि को मृत्यु हुई हो उस तिथि को उनका श्राद्ध करना चाहिये। इसमें ऐसा भी विधान है कि यदि उस निश्चित तिथि को किसी कारण से श्राद्ध न कर सके तो अमावस्या को सभी पितरों का श्राद्ध किया जा सकता है, इसीलिए इसे सर्वपितृ अमावस्या भी कहते हैं।

श्राद्ध कर्म किस समय करना चाहिये, इसके लिए यह कहा है देवताओं के पूजन का समय प्रातःकाल होता है तथा पितरों का

श्राद्ध कर्म मध्याह्न यानि दोपहर में करना चाहिए। श्राद्ध कर्म प्राथमिकता से किसी तीर्थ स्थल नदी-तट, वट-वृक्ष, गौशाला, पर्वत के शिखर पर या अपने ही घर में स्वच्छ स्थल पर करना चाहिए। श्राद्ध कभी दूसरे घर में नहीं करना चाहिये अन्यथा सारा फल उस गृह-स्वामी को प्राप्त हो जाता है।

जिस तिथि को श्राद्ध होता है उस तिथि को सूर्योदय के समय से ही पितर अपने पुत्र-पौत्र के घर के द्वार पर आकर बैठ जाते हैं। इस आशा से कि उनकी सन्तान उन्हें खीर-मधु तथा स्वादिष्ट पकवान से परिपूर्ण भोजन से तृप्त कर देंगे। ऐसे में पितर जब पूर्णतया तृप्त हो जाते हैं तब पितर उन्हें दीर्घायु-आरोग्य, धन-कीर्ति प्राप्त होने का आशीष दे जाते हैं। इसके विपरीत मार्कण्डेय पुराण में स्पष्ट उल्लेख कि जो पितर यदि भोजन नहीं प्राप्त करते हैं तो ये पितर क्रुद्ध होकर, गरम-गरम श्वास छोड़ते हुए भूखे प्यासे अपने पुत्र-पौत्रों को अनेक शाप देते हुए सूर्यास्त के समय निराश होकर अपने पितृ-लोक लौट जाते हैं। इस मान्यता के आधार पर प्रत्येक आस्तिक जन को अपने पितरों के शाप से बचने के लिये तथा उनके अनेक शुभाशीष प्राप्त करने के लिए श्राद्ध अवश्य करना चाहिए।

यजुर्वेद में उल्लेख है कि अपने पितरों का अति आदर-सम्मान से आह्वान करे उन्हें बुलाए 'आ यन्तु नो पितरः सोम्यासो अग्निप्रात्ताः पथिभिदेवयानैः अर्थात् हे अग्निविद्या के जानने वाले हमारे पितरों! आप देवयान से हमारे यहाँ पधारे तथा इस अमृतस्वरूप स्वादिष्ट भोजन का अति आनन्द से भोग करें। चूंकि पितर सूक्ष्म रूप में आते हैं और उस पकवान को मात्र सुंघकर ही तृप्त हो जाते हैं। इस प्रकार पितरों के तृप्त हो जाने पर श्राद्ध भोज पर आमंत्रित ब्राह्मणों को अति श्रद्धा और सम्मान से भोजन करायें। भोजन के पश्चात् ब्राह्मणों को दक्षिणा, वस्त्रदान यथाशक्ति देना

चाहिये। धर्मग्रन्थों में ब्राह्मणों को छाता और जूता (उपानह) देने को भी अति प्रासंगिक बतलाया है। ऐसी मान्यता है कि यमपुरी के मार्ग में गरम-गरम जलते हुए अंगारे बिछे रहते हैं उन जलते हुए अंगारों पर पितरों को चलकर जाना होता है और ऊपर भगवान सूर्यदेव की प्रचण्ड धूप उन्हें और अधिक त्रस्त कर देती है। अतः पितरों को इस कष्ट से बचाने के लिए पितर-स्वरूप इन ब्राह्मणों को छाता-उपानह भी देने का शास्त्रों में आग्रह किया है। इसी के साथ यह भी बतलाया है कि ब्राह्मणों की विषम संख्या यानि 1, 3 या 5 होनी चाहिये।

उपरोक्त श्राद्ध के अतिरिक्त गया जी में श्राद्ध करने का भी अति महत्व है। जब भगवान विष्णु के चक्र से गयासुर (राक्षस) का सिर धड़ से अलग होकर गिर पड़ा तो गयासुर पवित्र हो गया तब उसने भगवान विष्णु से कहा कि जो लोग यहाँ गयाक्षेत्र में अपने पितरों का पिण्ड दान करेंगे उसके सारे पितरों को बैकुण्ठ प्राप्त हो जायेगा।

इस प्रकार श्राद्ध कर्म एक सम्पूर्ण पद्धति है अतः हर आस्तिकजन को दीर्घायु, आरोग्य, धन धान्य और अक्षुण्ण सुख समृद्धि प्राप्ति हेतु अपने पितरों का अतिश्रद्धा से श्राद्ध करना चाहिये।

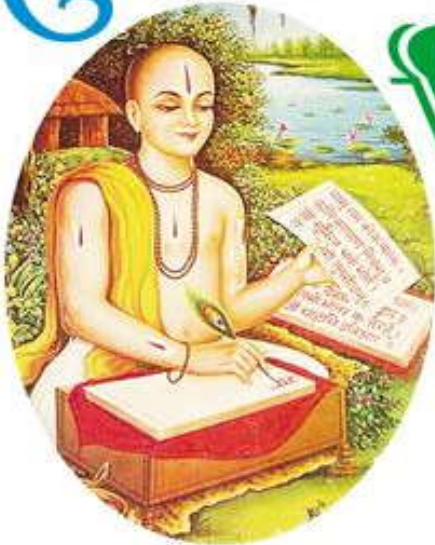
-डॉ. निखिलेश शास्त्री
7/2, न्यू पलासिया,
जैन दिवाकर कॉलेज रोड़,
इन्दौर



वही काम करना ठीक है,
जिसे करके पछताना न
पड़े।



तुलसी का विप्र प्रेम



ब्राह्मणोंस्य मुख मासीद् किमं बाहू राजन्य कृताः।

अर्थात् ब्राह्मणों की भगवान के मुख से तथा क्षत्रिय की भगवान की विशाल भुजाओं से उत्पत्ति हुई है।

द्विज, विप्र तथा ब्राह्मण एक दूसरे के पर्यायवाची शब्द हैं। जबकि विद्वानों के अनुसार 'जन्मना जायते शूद्र' अर्थात् बालक जन्म के समय शूद्र के रूप में होता है लेकिन संस्कार से वह द्विज, विप्र एवं ब्राह्मण बनता है। बालक का जब उपनयन संस्कार हो जाता है तब वह द्विज कहलाता है। द्विज अर्थात् जिसका दो बार जन्म होता है। प्रथम गर्भ से निवृत्ति पश्चात् उपनयन संस्कार द्वारा। द्विज की श्रेणी में सभी अंडज आते हैं। प्रथम अंडे के रूप में पश्चात् अंडा विच्छेदन कर अपने मूल रूप में। जब द्विज वेद पाठी हो जाता है तो वह विप्र की संज्ञा प्राप्त करता है। इसी प्रकार कहा गया है 'ब्रह्म जानेति ब्राह्मण' अर्थात् जब विप्र ऊपर उठकर ब्रह्म ज्ञान प्राप्त कर लेता है तो वह ब्राह्मण कहलाने लगता है, किन्तु सामान्यरूप से द्विज, विप्र, एवं ब्राह्मण एक दूसरे के पर्यायवाची अथवा समानार्थी शब्द माने जाते हैं। कविकुल चुड़ा मणी महाकवि तुलसीदास ने रामचरित मानस में इसी भावना से द्विज, विप्र, ब्राह्मण, भूदेव, भूपति, भूसुर आदि शब्दों का प्रयोग किया है। इन्हीं को आधार मानकर तुलसी के विप्र प्रेम पर हम यहाँ चर्चा करेंगे।

मानस के प्रारम्भ में कवि तुलसी ने सर्वप्रथम वीणा पाणी भगवती सरस्वती, पश्चात् श्री गणेश, पार्वती भगवान शंकर की वंदना पश्चात् विष्णु एवं गुरु की वंदनोपरांत अज्ञान जनित संदेह का हरण करने वाले ब्राह्मणों के चरणों की वंदना की है। यहीं से तुलसी का विप्र प्रेम प्रगट होता है। 'बंदहु प्रथम महीसुर चरना। मोह जनित संसय सब हरना'। एक बार वंदना करने पर भी जब कवि को संतोष नहीं हुआ

तो उन्होंने पुनः मानस लेखन की सफलता के लिये अपना मनोरथ पूर्ण करने हेतु वंदना की।

बिबुध विप्र बुध ग्रह चरन बेदि क हडँ कर जोरि।

होइ प्रसन्न पुरवहु सकल, मंजु मनोरथ मोरि।।

शिव विवाह प्रसंग में तो तुलसी ने भगवान शंकर से भी अपने इष्ट देव रघुकुल मणी श्रीराम का ध्यान अथवा स्मरण करने के पूर्व ब्राह्मणों को प्रणाम करवा दिया।

बैठे सिव विप्रन्ह सिर नाई। हृदयं सुमिरि निज प्रभु रघुराई।।

राजा प्रतापभानु कथा प्रसंग में तुलसी, ब्राह्मणों की तपोशक्ति का बखान करते हुए कहते हैं कि ब्राह्मण तप के बल से सदा बलवान रहते हैं। उनके क्रोध से रक्षा करने वाला कोई नहीं होता। यदि तुमने उन्हें वश में कर लिया तो ब्रह्मा, विष्णु और महेश भी तुम्हारे वश में हो सकते हैं।

तप बल विप्र सदा बरिआरा। तिन्ह के कोप न कोउ रखवारा।
जो विप्रन्ह बस करहु नरेसा। तो तुअ बस विधि, विष्णु महेसा।।

तुलसीदास ब्राह्मणों की शक्ति का बखान यहाँ तक करते हैं कि ब्राह्मण कुल से जोर-जबर्दस्ती नहीं चल सकती, अतः तुम ब्राह्मणों को प्रसन्न करने का उपक्रम करो। ब्राह्मणों के श्राप से बचोगे तो तुम्हारा नाश कभी नहीं होगा।

विप्र श्राप विनु सुनु महिपाला। तोर नास नहीं कबनेहुँ काला।

अंततः कथा प्रसंगानुसार विप्र श्राप से ही राजा प्रताप भानु का नाश हो जाता है। तुलसी ने विप्र श्राप को अत्यंत भयानक बतलाया है।

विप्र श्राप अति घोर। दो.कां. दो.क्र. 174

इस प्रकार तुलसी ने मानस के माध्यम से जन सामान्य को ब्राह्मणों के श्राप से बचने का प्रभावी संदेश दिया है। भगवान के अवतरण के मुख्य कारणों में प्रथम कारण, ब्राह्मणों को ही बतलाया गया है।

विप्र धेनु सुर संत हित, लीन्ह मनुज अवतार।

इस दोहे का प्रथम शब्द विप्र आया है। परशुरामजी महाराज के मष ब्राह्मण होने के कारण रघुकुल पति तथा लक्ष्मण ने उनके कटु से कटु वचनों को न केवल सहन किया अपितु उनसे क्षमा तक मांग ली। छम हूँ नाथ अपराध हमारे। कवि ने स्वयं श्री राम के मुख से ब्राह्मणों की प्रशंसा करवाई है।

यथा- विप्र वंश के असि प्रभुताई।

अभय होइ जो तुम्हहिं डराई।।

ब्राह्मणों के लिये राजा हो या महाराजा, सभी के कपाट सर्वदा-सर्वदा खुले रहते हैं। उन्हें कहीं भी कभी भी जाने-आने में रोक-टोक नहीं होती। इसीलिय ब्रह्मा, विष्णु, महेश तथा दिकपालादि ब्राह्मण का सुन्दर वेश धारण कर श्रीराम की बारात में सम्मिलित होकर उसका आनंद प्राप्त किया है। ये हैं समाज में ब्राह्मणों का स्थान, महत्व। (क्रमशः)

-हरिनारायण नागर वरिष्ठ पत्रकार

306, आशुतोष निकेतन, देवास मो. 9425948177

संतोषी वर्सेस महत्वाकांक्षी



प्रिय पाठकों आपसे सानुरोध निवेदन है कि यह लेख किसी व्यक्ति, समुदाय, परिवार, जाति, समाज, व्यवसाय, धर्म, कर्म, व्यवस्था आदि से संबंधित नहीं है और महज एक कल्पना है जो मनोरंजन के उद्देश्य से वर्णन किया गया है, या लिखा गया है। अतः इस डिसक्लेमर को ध्यान में रख कर लेख का आनंद लें। कारण, आजकल लेख, कविता, मुहावरे, उपदेश आदि देना या ट्वीट करना या मिडिया से कहना बहुत महंगा पड सकता है क्योंकि बहुत पढ़े-लिखे इस देश में टांग खींचने वालों की शार्टेज तो ज़रा भी नहीं है। इस टांग खिंचाई वाले शब्द के आते ही मुझे एक वाक्या याद आया है जो संक्षेप में आपसे शेयर करता हूँ।

हुआ यूं कि एक आदमी तालाब के किनारे एक छोटे

डिब्बे में बिच्छू पकड़ कर डाल रहा था। थोड़े बहुत बिच्छू इस डिब्बे में एकत्रित हुए ही थे कि पास में से एक व्यक्ति गुजर रहा था। उसने यह नज़ारा देखा। फिर बिच्छू पकड़ने वाले से कहा कि अरे भैया, एक ही डिब्बे में इतने सारे बिच्छू पकड़ कर डाल रहे हो तो ये कुछ ऊपर आकर डिब्बे से बाहर निकल जाएंगे। तो वह व्यक्ति बोला भले आदमी, घबराओ नहीं, ये सब देशी बिच्छू है। जैसे ही कोई उपर की ओर उठेगा, नीचे वाले बिच्छू उसकी टांग पकड़ कर नीचे ले जाएंगे। उपदेश देने वाला व्यक्ति स्तब्ध रह गया। तो, विषय पर चर्चा शुरू करें ?

सभी प्रिय पाठकों ने पुराने कई दोहे, मुहावरे, कहावतें आदि पढ़े होंगे। तो वैसी कहावतों और मुहावरों में से कुछ वर्तमान परिप्रेक्ष में अर्थहीन या महत्वहीन नजर आती है। (यदि पाठकगण सहमत न हों तो ऊपर के पेराग्राफ में, डिसक्लेमर पर पहले गौर फरमा लेना)। हाँ, तो आपने एक कहावत पढ़ी होगी कि 'अजगर करे ना चाकरी, पंछी करे ना काम, दास मलुका कह गये सब के दाता राम'। अब

देखिये, इस दोहे को आदर्श मानकर पढ़कर कोई व्यक्ति, अमल करे और इसी पर विश्वास करे और बैठा रहे और कार्य नहीं करे, तो क्या वर्तमान दुनिया में जहां जॉब के लिये गला काट घोर प्रतिस्पर्धा है, उसमें क्या वह व्यक्ति जीवन-यापन कर सकेगा ? पंछी का भी सहारा लेकर बैठा रहे तो क्या मुनासिब होगा ? माना कि अजगर और पंछी जानवर हैं फिर भी उनको थोड़ा प्रयास करना ही होता है स्वयं के उदर-पोषण हेतु। पंछी इधर-उधर उड़ता है और दाना-पानी ढूंढता है। यह भी काम ही हुआ न।

अजगर भले ही चाकरी (नौकरी) ना करे तो भी स्वयं को इधर-उधर रेंगते हुए भोजन की तलाश में जाना पड़ता ही है। नौकरी ना करे और कोई फ़ाईल ना निपटाए तो भी स्वयं के लिये तो काम करना ही

होगा। हाँ, किसी को पकड़ कर निगल जाए तो उस जीव की फाईल जरूर निपट जाएगी। उपरोक्त दोहा या कहावत कब लिखी होगी यह तो विदित नहीं है परंतु यदि त्रेता युग में लिखी हो तो, इस युग में मान लो चाकरी, काम, आदि ना करना पड़ता हो और श्रीराम की कृपा से सब यूं ही प्राप्त हो जाता हो किंतु वही श्रीराम, द्वार पर युग में श्री कृष्ण के अवतार में प्रकट हुए पर उन्होंने कर्म को ही प्रधान माना, अर्थात् सभी जीवों को कर्म तो करना ही पड़ेगा तभी जीवन-यापन कर सकेंगे। हाँ, कर्म-फल अपने हाथ में रखा। यदि संत मलुकादास जी के कथन को हर व्यक्ति, फॅलो (विससवू) करे और कुछ भी कर्म ना करे और ईश्वर के भरोसे रहे तो फिर श्री कृष्ण प्रभु के उपदेश का क्या अर्थ निकाले ?

और कहावत है कि 'संतोषी सदा सुखी'। पूरी कहावत यूं है कि 'रजधन, गजधन, बाजीधन, अरूधन मिले अजान, जब मिल जाए संतोषधन, सबधन धूरी, समान'। ठीक है, संतोष रखना अच्छा है पर क्या वर्तमान परिप्रेक्ष में 'संतोष धन' से निर्वाह हो जाएगा ? इस दोहे

अर्थहीन होते मुहावरे एवं कहावतें

को किसी संत ने लिखा होगा ऐसा प्रतीत होता है। परंतु ये सब उपदेशों में और सुनने में सुहावने लगते हैं। उपदेश देना सरल है किंतु अमल में लाना या फॅलों करना ज़रा टेढ़ी खीर है। आज के इस कॉम्प्यूटीशन और महत्वाकांक्षा के युग में क्या यह संभव है ? आजकल तो जमाने की सोच, 'डिटरजेन्ट पाउडर' के विज्ञापन के समान है कि 'उसकी साडी मेरी साडी से ज्यादा सफेद क्यों ? यह सोच आवश्यक ही है वरना वर्तमान समय में संतोष करने वालों को मन ही मन हीन-भावना से ग्रसित होना पड़ता है। मसलन, पड़ोसी अति-महात्वाकांक्षी है, वैभव युक्त है, तो दूसरे साधारण पड़ोसी को मन ही मन बराबरी की चेष्टा हो सकती है और वो प्रयास करेगा। यदि यह सोच डेवलप हुई तो फिर संतोष की क्या वेल्यू ? परिवार में बड़े सदस्य उम्र के कारण संतोषी बन कर बैठ जाएं तो अनेक यंग बच्चों को टीस तो रहेगी कि हम अभावग्रस्त क्यों ? यह संतोष एक तरह से अनुपयोगी ही कहा जा सकता है। यदि संसार में सभी संतोषी होते, विशेष तौर पर भौतिक रूप से, तो विज्ञान का विस्तार असंभव होता।

उदाहरण, बगीचे में सेब-फल पेड़ पर से वैज्ञानिक, 'न्यूटन', के पास में ज़मीन पर गिरा और मान लो उन्होंने संतोष किया होता कि सेब-फल नीचे ज़मीन पर गिरा तो गिरा होगा, अपुन को क्या। लेकिन, न्यूटन तो महत्वाकांक्षी वैज्ञानिक था। कारण ढूँढा, प्रयास किया, पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण बल को प्रतिपादित किया जो एक महत्वपूर्ण खोज हुई। यह तो एक उदाहरण है, वरना वैज्ञानिक खोजे। आविष्कार तो बहुत हुए जो बिना साहस और प्रतिस्पर्धा और कर्म

के पूर्ण होना संभव नहीं था। जॉर्ज स्टीफन किचन में देगची के ढक्कन को भाप की शक्ति से उपर-नीचे होते देखकर संतोषपूर्वक यूँ ही बैठ जाते तो भाप की ताकत के रेल-इंजिन नहीं बनते। वर्तमान में भले दूसरे ईंधन से इंजिन चलते हैं, लेकिन बेसिस तो वही थी।

केवल संतोष करके बैठने वाले अर्थात्, जो हैं वही काफी हैं, की सोच रखने वाले सभी लोग होते तो संसार की भौतिक वस्तुएँ शायद देखने नहीं मिलती और व्यक्ति उत्साहहीन होकर पशु-पक्षियों की तरह जीवन-यापन करता याने उन्नति शून्य होती।

कहने का तात्पर्य यही है कि पुरानी कहावतें या मुहावरें या दोहे तत्कालीन समय में तर्क संगत हो सकते थे लेकिन वर्तमान युग में थ्योरी (जिमवतल) में ठीक किंतु प्रेक्टीकल में अनुपयोगी ही कहे जा सकते हैं। हाँ, यदि संसार के सब मुख भोगकर कोई व्यक्ति पांडाल में

किसी के प्रवचन सुन कर संतोषी बन जाता है एवं वैराग्य की बातें करता है तो पुरानी कहावत कि "सौ-सौ चूहे खाकर बिल्ली हज़ को चली" जरूर कारगर साबित हो सकती है, वर्तमान में भी।

उपरोक्त वर्णित कहावत। दोहे के ठीक अलग एक अन्य उपदेशक दोहा संस्कृत में कहा गया है कि "उद्यमेन ही सिध्यन्ति, कार्याणि न मनोरथैः, न ही सुसस्य सिंहस्य प्रविश्यतेन मुखे मृगाः"। अर्थात् हर कार्य परिश्रम से ही पूर्ण होता है, न कि केवल मनोरथ या इच्छा प्रकट करने से। जैसे गुफा में सोए हुए शेर के केवल इच्छा करने से उसके मुँह में हिरन स्वतः प्रवेश नहीं करता। अर्थात् उसे शिकार के लिये जंगल में भटकना पड़ता है तब जाकर वह सफल हो पाता है। केवल संतोषपूर्वक बैठकर इच्छा प्रकट करने से कोई कार्य पूर्ण नहीं हो सकता।

अंत में यह कहा जा सकता है कि संतोष व्यक्ति को आलसी बना देता है एवं कुछ नया

करने की सोच को कुंठित कर देता है। संतोष एवं वैराग्य की बातें पांडालो में प्रवचनों में ही चार चाँद लगा देती हैं और तालियों को बटोर लेती हैं, लेकिन वर्तमान घोर प्रतिस्पर्धा के युग में मनुष्य जीवन में प्रेक्टीकली संभव प्रतीत नहीं हो सकती।

उपरोक्त, बातें लेखक की सोच हैं। जरूरी नहीं कि हर व्यक्ति विचारों से सहमत हो तो क्योंकि "मुण्डे-मुण्डे मतिर्भोत्रा एवं कुण्डे-कुण्डे वारी (पानी) भिन्ना"। याने हर खोपड़ी में बुद्धि अलग-अलग होती है एवं हर कुण्ड के पानी में अंतर होता है। ऊपर वर्णित डिसक्लेमर को जरूर ध्यान में रखे।

-यशवंत नागर,

इन्कमटेक्स असिस्टेंट कमीशनर
(से.नि.) (बांसवाड़ा वासी), उज्जैन
फोन नं. - 0734-2533151
चलते-चलते - 08989219599

जिन्दगी में खुशी पाने का राज

हम सब की आकांक्षा जल्दी से जल्दी बहुत सारा धन पाने की रहती है। हर कोई बंगला और कार खरीद कर ऐशो आराम की जिन्दगी बिताना चाहता है पर ऐसा जादुई चिराग हर किसी के हाथ नहीं लगता। जिन्दगी एक पहेली है। अधिकतर लोग तो यह समझ ही नहीं पाते कि जिन्दगी क्या है? क्या ये खुशियों से परिपूर्ण है? आनन्दमय है? या फिर दुख, संकट, क्लेश, मनोव्यथा और पीडा से भरी हुई है? जिन्दगी के बारे में विभिन्न विचारकों के सोचने का नजरिया भी आश्चर्यजनक रूप से अलग अलग दिखाई देता है।

भगवत गीता में लिखा है कि सुख और दुख ज्वार भाटे की तरह होते हैं। व्यक्ति का उस पर कोई नियंत्रण नहीं होता है। इसलिए समान भाव से उनका अनुभव और सामना करना चाहिए। तैत्रिय उपनिषद में कहा है कि जीवन में जो सार तत्व हैं वह आनन्द है क्योंकि ईश्वर आनन्दमय है और हम सब उसी के अंश हैं। दूसरी तरफ भगवान बुद्ध कहते हैं कि जन्म दुखपूर्ण है, नाश दुखपूर्ण है, रोग दुखपूर्ण है, मृत्यु दुखपूर्ण है, सुख से दूरी होना और तृष्णाओं की पूर्ति न होना भी दुख का कारण बन जाता है। दार्शनिक चार्वाक तो कहते हैं कि जिन्दगी न तो आनन्दमय है और न ही दुखमय। इसे हम जैसा चाहें वैसा बना सकते हैं। उनका दृढ़ मत है कि 'यावत् जीवेत् सुखम् जीवेत्' जिन्दगी जैसी भी हो जब तक जियो खुशी से जियो। हमारे अधिकतर दुख दो तरह के होते हैं। पहली श्रेणी में वे दुख आते हैं जो धन के अभाव या कमी से उपजते हैं। अभावों के दुखों पर हम तीन तरह से नियंत्रण कर सकते हैं, एक-

अधिक धनार्जन करके, दूसरे-आशा, ईच्छा, आकांक्षाओं को कम करके। तीसरे-हम जितनी चादर हो उतने ही पैर फैलाने की आदत डाल लें तो धन का अभाव हमें धीरे धीरे तड़पाना कम कर देगा। ऐसे में यह याद रखना भी बहुत उपयोगी होगा कि जिसने तृष्णाओं पर विजय पा ली समझ लो उसने सब कुछ अपनी मुट्ठी में कर लिया। दूसरी श्रेणी के दुख आपसी सम्बन्धों में तालमेल के अभाव और खींचतान से जिन्दगी में उथल पुथल मचा देते हैं। पति पत्नी में, पिता पुत्र में, भाई बहन में, आपिस में, पास पड़ोस में, दोस्तों में, खिटखिट होती रहती है। पर एक ऐसा तरीका है जिससे हम आपसी संबंधों का तनाव मिटा सकते हैं। यह तरीका है-'अपने परिजनों को पहचानें।' अर्थात् जिस निकट संबंधी से आपको तनाव या तनातनी होती है उसके स्वभाव, आदतों, रुझान, पसंद, नापसंद से संबंधित सारी जानकारी को सूचीबद्ध करें और इसके अनुसार उसके अनुकूल व्यवहार करने लगे और प्रतिकूल व्यवहार से बच कर रहें तो तनाव और मनमुटाव दोनों से बचे रहेंगे। कभी कभार मौन रह कर और कभी थोड़ी दूरी बना कर भी हम संबंधों को मैनेज कर सकते हैं।

गीता में व्यक्त कथन के परिप्रेक्ष्य में सबसे महत्वपूर्ण बात ध्यान में रखने की यह है कि सुख दुख पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं होता है इसलिए दुख के समय को हंसते हंसते काट लेना ही समझदारी है।

-डॉ. रणवीर नागर

सी-12/9, ऋषिनागर, उज्जैन मो. 99265 73054



भावनाओं का असर

सीमा नाम की महिला की शादी सुशील नाम के युवक से हुई। सुशील के माता-पिता का देहांत हो चुका था। सुशील के उपर अपने छोटे भाई सुमीत की जिम्मेदारी थी, जब सुशील की शादी हुई आठ साल के देवर की जिम्मेदारी सीमा पर आ पड़ी।

सीमा को उसके नवविवाहित जीवन में सुमीत कांटे की तरह चुभने लगा। उसकी हाजिरी खटकने लगी। उसको खाना परोसते समय हमेशा उसके मन में ये विचार आते थे बला मेरे सर कैसे पड़ गई? मुझे कब तक इसे झेलना पड़ेगा?

कुछ समय बाद अचानक सुमीत के पेट में दर्द शुरू हुआ। डॉक्टर को दिखाया, सब रिपोर्ट्स भी करवाए पर डॉक्टर को बीमारी का कोई कारण समझ में नहीं आया। उन के हिसाब से सब कुछ नॉर्मल था। सुमीत का दर्द धीरे-धीरे बढ़ने लगा। सुशील और सीमा दोनों ही परेशान हो गये। उनके गाँव में अध्यात्म में रुचि रखने वाले एक वैद्यजी थे। लोगों की सलाह पर वैद्यजी को घर पर बुलाया गया।

वैद्यजी ने पूछा, सुमीत भोजन कैसे करता है ये मैं देखना चाहता हूँ। उन्होंने देखा कि सुमीत थोड़ा बहुत भोजन करता वो भी अनमने मन से, पर भोजन बनाते और परोसते समय सीमा के चेहरे के भाव वैद्यजी ने पढ़ लिए। उन्होंने सीमा से कहा कि सुमीत को भोजन परोसते समय मन में जो नकारात्मक और घातक विचार हैं वही सुमीत की बीमारी का कारण है। सीमा ये जानकर बहुत शर्मिन्दा हुई और उसने संकल्प किया कि वह अपने देवर को बहुत प्यार से भोजन परोसेगी। कुछ दिन बाद सुमीत की हालत में आश्चर्यजनक परिवर्तन हुआ और वह पेट दर्द से हमेशा के लिए मुक्त हो गया। मुझे याद है कि जब मैं छोटी थी, मेरे पिताजी की सिमित आय की वजह से घर में एक टाइम सब्जी और एक टाइम दाल बनती थी, फिर भी हम पाँचों भाई-बहन स्वस्थ रहते थे। हमारे पड़ोसी भी आश्चर्य करते कि वे लोग तो नियमित रूप से फल और दूध बच्चों को देते हैं फिर भी उनके बच्चे इतने स्वस्थ नहीं रहते।

सब भावनाओं का खेल है। अच्छी भावना और स्नेह से बनाई गई दाल-रोटी भी परिवार को स्वस्थ रख सकती है। अंत में गृहिणियों से निवेदन है कि भोजन बनाने और परोसते समय सदा मन में शांति, संतोष और प्रसन्नता एक प्रार्थना प्रस्तुत है, जो सभी गृहिणियाँ भोजन बनाते और परोसते समय कर सकती है। जो खाना मुझ से बनने जा रहा है, वह खाने वाले के शरीर को स्फूर्ति स्वास्थ्य और चेतना से भर दे, मैं शांत और समर्पित भाव से खाना बनाऊँगी। धन्यवाद।

-उषा ठाकोर, मुम्बई

जहाँ है विश्वास और प्यार वहीं है सुखी परिवार

अच्छे संस्कार एवं शुभ परंपराएँ हमें हमारे परिवार से मिलती हैं। एक परिवार ही है जो हमेशा हमारे साथ है चाहे सुख हो या दुख हमें सफलता मिले या असफलता।

हर व्यक्ति को अपने परिवार का मजबूत सहारा व भरोसा होता है। भले ही परिवार आर्थिक दृष्टि से समृद्ध हो या न हो, प्यार भरे शब्द हौंसला दिलाने वाली प्रेरणात्मक बातें व्यक्ति को कड़ी मेहनत कर सफलता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती हैं।

परिवार वह है जहाँ सब अपने होते हैं। हमारे सहपाठी, मित्र भी हमारे परिवार का हिस्सा बन जाते हैं। परिवार का संबंध केवल रक्त से नहीं होता बल्कि हृदय से होता है।

परिवार छोटा या बड़ा दोनों हो सकता है जरूरी है आपसी प्यार और विश्वास। वह परिवार सही मायने नहीं रखता जहाँ विश्वास नहीं, प्यार नहीं है जहाँ पर चाल और धोखा है जहाँ संपत्ति के लिए लोग एक-दूसरे को मारने लगे ऐसे परिवार का ना होना अच्छा है।



वर्तमान समय में कई युवा परिवार को परंपराओं को अपनी सफलता में अवरोध मानते हैं वे स्वतंत्रता से ऊँचाईयों को छुना चाहते हैं। इस संदर्भ में एक कथा विचारणीय है।

एक बार एक पिता पुत्र आसमान से पतंग उड़ा रहे थे। पिता के हाथ में पतंग की डोर थी, पुत्र ने देखा एक निश्चित दूरी के बाद पिता उस डोर को ढील नहीं दे रहे थे। पुत्र ने पिता से कहा पिताजी आप डोर को और ढील जाने दो तो पतंग और ऊँचाई पर जाएगी। पिताजी ने डोर अपने हाथ से छोड़ दी थोड़ी देर पतंग आसमान में डगमगाई फिर धीरे-धीरे जमीन पर गिर कर फट गई। इसी प्रकार हम अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों के बंधन से मुक्त होना चाहते हैं, परन्तु यही संस्कार व परिवार ही हमारे जीवन को संतुलित करते हैं। अगर व्यक्ति अनंत आकाश की ऊँचाइयों को चुमना चाहता है और अपनी जड़ों से जुड़ना चाहता है तो परिवार का महत्व समझें।

-श्रीमती रश्मि भूपेन्द्र नागर
1644-डी, सुदामा नगर, इन्दौर
मो. 9424567007

सकारात्मक सोच – एक चिन्तन

मनुष्य को विद्वानों ने सामाजिक प्राणी की संज्ञा दी है और मानव को समाज में रहकर चाहे वह महिला हो या पुरुष उसे सामाजिक पारिवारिक एवं व्यवहारिक उत्तरदायित्वों का सिद्धान्त निर्वहन करना होता है। अतः व्यक्ति का चिन्तन कैसा हो इस पर विचार जरूरी है जो एक समाज के लिए सही मार्गदर्शी सिद्ध हो सकता है।

मानव को जीवन में सफल होना है तो उसे सामाजिक उन्नति के लिए छोटी सोच एवं नकारात्मक सोच वाले लोगों के चक्कर अर्थात् उनके विचारों से दूर रहना होगा। यदि समाजोत्थान ही करना है तो अपनी दृष्टि को अपने लक्ष्य पर लगाएँ, लक्ष्य आपसे कभी दूर नहीं होगा। मनुष्य के जीवन में खुशियाँ भी हैं, गम भी है, सुख भी है, दुःख भी है, अंधेरा भी है, उजाला भी है और इसी आधारभूत व्यवस्था को लेकर हम स्वयं को कर्मों के अधीन पाते हैं। अगर हम अपनी हालत एवं व्यवस्थाओं को बदलना चाहते हैं तो हमें अपनी सोच के नजरिये अर्थात् व्यवहारिक दृष्टिकोण को बदलना होगा।

समाज के प्रति या हर कार्य के प्रति सकारात्मक एवं रचनात्मक सोच ही सफलता प्राप्त करने की कुंजी है। सांसारिक जीवन में असफल व्यक्ति दो तरह के होते हैं, एक तो वे जो कुछ करते हैं, लेकिन कुछ भी सोचते नहीं, दूसरे वे जो कुछ सोचते तो हैं, मगर कुछ करते नहीं।

मानवीय समाज में हमें हमारी जिन्दगी को एक अच्छे सांचे में ढालने का पूर्ण प्रयास करना होगा। सफलता के शिखर पर पहुँचने से पहले हमें सफलता कैसी मिलती है। सफलता क्या होती है इस हेतु हमें अपनी पूर्ण सकारात्मक सोच की भावना से अनुभव करना होगा। तभी सफलता हमारे कदम चूमेगी। प्रत्येक मानव विचारों से पूर्ण नहीं होता, उसमें कुछ न कुछ कमी रहती ही है। सामाजिक व्यक्ति को समाज में जैसा भी पात्र मिले योग्य-अयोग्य उसे समय रहते स्वीकार कर लेना चाहिए। हमें हर तरफ व

हर जगह परिपूर्णता की इच्छा नहीं रखना चाहिए, क्योंकि मानव परिस्थितियों का दास है, परिस्थितियाँ सदैव अनुकूल नहीं रहती।

मनुष्य को जो एक सामाजिक जीव है उसे अपनी समाज सेवा करते हुए आने वाली उलझनों व बाधाओं को सुलझाने के प्रयास करना चाहिए। व्यक्ति को जिस काम से मान लो डर लगता है तो उस काम को समझकर और पूर्ण समझदारी से सचेत होकर करना चाहिए। जिसके करने से मन का भय और खौफ दूर हो जाता है तथा आप जिस कार्य को सम्पादित करना चाहते हैं वह सुचारु हो जाता है।

विज्ञानों का ऐसा भी मानना है कि व्यक्ति को समय अच्छा है या बुरा इसका इन्तजार करके समय को बर्बाद नहीं करना चाहिए। जो भी समय होता है अच्छा होता है अनुकूल होता है केवल अपने विचारों को सकारात्मक सोच के पहलू को मजबूत रखें और आगे बढ़ें। मानवीय व्यक्ति को सिर्फ विचारों से ही सफलता नहीं मिलती है। बल्कि सफलता विचारों के द्वारा प्रदान किए गये सद्विचारों के सद्मार्ग पर चलने से मिलती है और इसी आधार पर समाज प्रगति पथ पर अग्रसर होकर उन्नति प्राप्त करता है।

समाज में सकारात्मक दृष्टिकोण वाला व्यक्ति अपने आसपास चारों ओर का माहौल आनन्ददायक बना देता है ऐसे उदाहरण समाज में हमें देखने को मिल रहे हैं, जैसे परमादरणीय नागर रत्न भागवत भूषण आचार्य श्री कमलकिशोरजी नागर एवं हाटकेश्वर धाम निर्माण समिति के सभी प्रबुद्ध ट्रस्टी समाजसेवी जलों ने अपनी पूर्ण सिद्धांत से 'हाटकेश्वर धाम' का समय रहते पुनः नवनिर्माण करके सही अर्थों में सकारात्मक सोच का एक व्यापक उदाहरण प्रस्तुत किया है।

सामाजिक व्यक्ति समाज सेवा के लिए कई उलझने एवं थपेड़े खाकर दुख तकलीफें एवं कई कठिनाइयों को सहन करके ही उसे सुख की महत्ता का ज्ञान होता है। यह भी

सच है कि कल्पनाओं से वह सब कुछ हमें नहीं मिलता जिसकी हम सब कल्पना करते हैं अर्थात् हम जो भी सोचते हैं उस तरह की कल्पनाएं भी कभी-कभी हमारे कर्मों व कार्यों के प्रति पूर्णतः लापरवाह एवं अज्ञानता के तरफ ले जाती हैं।

लक्ष्य, उद्देश्य और सोच यदि सकारात्मक है और रचनात्मक सोच के साथ यदि हौंसले बुलन्दी के साथ मजबूत है तो व्यक्ति अर्थात् सामाजिक जीव अपनी मंजिल पर आसानी से एवं सफलता पूर्वक पहुँच सकता है। अन्ततोगत्वा सामाजिक जीवन को सार्थक करने के लिए हमें पूर्णतः रचनात्मक तौर तरीको को अपनाकर सकारात्मक सोच एवं आत्मबल का विकास करना आवश्यक एवं अनिवार्य है, क्योंकि सकारात्मक दृष्टिकोण अर्थात् अच्छा सोच एवं विचार किसी भी व्यक्ति की बहुमुल्य सम्पत्तियों में से एक है। व्यक्ति मात्र को अपने जीवन को सार्थक करने के लिए अपने में सकारात्मक सोच तथा आत्मबल विकसित करना होगा और यही विचार धारा मानव समाज को जागृत करती रहेगी।

कहा भी गया है कि अगर जिन्दगी में कुछ पाना है व करना है तो तरीके बदलो इरादे नहीं सदैव ही सकारात्मक सोचो, सकारात्मक करो, रचनात्मक कर्म साधना की सफलता सही सकारात्मक सोच से और मानवोचित चिन्तन एवं मानव को उसके मानवी अव्यवहार में शुद्धता की ओर परिलक्षित करती है। धन्यवाद सहित जय हाटकेश।

-गोपालकृष्ण श्यामलाल दीक्षित
ग्राम व पोस्ट सिर्रा जिला खण्डवा



सूर्य नमस्कार से पूरे परिवार को लाभ-3

शरीर के सभी अंगों की विकृति दूर हो जाती है

सूर्य नमस्कार की उपरोक्त बारह स्थितियाँ हमारे शरीर के सम्पूर्ण अंगों की विकृतियों को दूर करके निरोग बना देती हैं। यह पूरी प्रक्रिया अत्यधिक लाभकारी है। इसके अभ्यास के हाथों-पैरों के दर्द दूर होकर उनमें सबलता आ जाती है। गर्दन, फेफड़े तथा पसलियों की मांसपेशियाँ सशक्त हो जाती हैं, शरीर की फालतू चर्बी कम होकर शरीर हल्का-फुल्का हो जाता है।

सूर्य नमस्कार के द्वारा त्वचा रोग समाप्त हो जाते हैं अथवा इनके होने की संभावना समाप्त हो जाती है। इस अभ्यास से कब्ज आदि उदर रोग समाप्त हो जाते हैं और पाचनतंत्र की क्रियाशीलता में वृद्धि हो जाती है। इस अभ्यास के द्वारा हमारे शरीर की छोटी-बड़ी सभी नस-नाड़ियाँ क्रियाशील हो जाती हैं, इसलिए आलस्य, अतिनिद्रा और विकार दूर हो जाते हैं। सूर्य नमस्कार की तीसरी व पांचवी स्थितियाँ सर्वाइकल एवं स्लिप डिस्क वाले रोगियों के लिए वर्जित हैं।

सूर्य नमस्कार प्रक्रिया क्रम सूर्य नमस्कार के आसान

आसन	श्वासनक्रिया	मंत्र	मंत्र और चक्र	आसन
1. प्रणामासन	उच्छ्वास	बीज	चक्र	
2. हस्त उत्तानासन	श्वास	1. ॐहं	अनन्तचक्र	प्रणामासन
3. उत्तानासन	उच्छ्वास	2. ॐहीं	विशुद्धिचक्र	हस्तोत्तानासन
4. अश्व संचालनासन	श्वास	3. ॐहं	स्वाधिष्ठानचक्र	उत्तानासन
5. चतुरंग दंडासन	उच्छ्वास	4. ॐहैं	आज्ञाचक्र	अश्वसंचालासन
6. अष्टांग नमस्कार	रोखा	5. ॐहैं	विशुद्धिचक्र	चतुरंग दण्डासन
7. भुजंगासन	श्वास	6. ॐहः	मणिपुरचक्र	अष्टांगनमस्कारासन
8. अधोमुक्त श्वानासन	उच्छ्वास	7. ॐहां	स्वाधिष्ठानचक्र	भुजंगासन
9. अश्व संचालनासन	श्वास	8. ॐ	विशुद्धिचक्र	अधोमुखश्वानासन
10. उत्तानासन	उच्छ्वास	9. ॐहं	आज्ञाचक्र	अश्वसंचालनासन
11. हस्त उत्तानासन	श्वास	10. ॐहैं	स्वाधिष्ठानचक्र	उत्तानासन
12. प्रणामासन	उच्छ्वास	11. ॐहैं	विशुद्धिचक्र	हस्तोत्तानासन
		12. ॐहः	अनन्तचक्र	प्रणामासन

सूर्य नमस्कार में चरणों में से प्रत्येक शरीर के लिए लाभ है। सूर्य नमस्कार के फायदे के पूरे शरीर को मन से खिंचाव।

1. मांसपेशियों को मजबूत किया है।
2. रक्त परिसंचरण में सुधार हुआ है और अनियमित मासिक धर्म चक्र विनियमित रहे हैं (चरण 3, 5, 7)।
3. सूर्य नमस्कार व्यक्तियों के वजन को कम करने में प्रभावी है। पेट की मांसपेशियों को अच्छी तरह से पाने के लिए और कमर के चारों ओर अत्यधिक वसा खो दिया है। अतिरिक्त कैलोरी को खो रहे हैं और लचीलेपन में सुधार हुआ है। पाचन



- (चरण 3 और 7) सुधार हुआ है।
4. डिप्रेशन क्रमशः समाप्त होता है और चिंता (चरण 5) कम हो जाती है।
5. नींद और एकाग्रता (चरण 1) सुधार

कर रहे हैं।

6. थायराइड, पिट्यूटरी ग्रंथि अधिवृक्क ग्रंथि, पैराथायराइड, वृषण सहित अंतरू सावी प्रणाली के कामकाज, अंडाशय (चरण 4) सुधार कर रहे हैं।

7. अच्छी मुद्रा रखता है। (समापन)

-दयाराम नागर
योग प्रशिक्षक
सुमेरपुर
(राज.)



योग के द्वारा आसान है घुटनों के दर्द का निवारण

घुटना दर्द- 40-45 वर्ष के पुरुषों व 35-40 वर्ष की स्त्रियों में अधिकतर घुटने दर्द की शिकायत होती है। घुटने में दो हड्डियाँ होती हैं। एक ऊपर और एक नीचे। ऊपर वाली हड्डियों को (फीमर) व नीचे वाली हड्डियों को (टीबिया) कहते हैं। घुटने का दर्द बहुत ही जन साधारण का होता रहता है। अर्थाइटी घुटने के दर्द को ओस्टियो आर्थराइटीज कहते हैं। इससे जोड़ों में दर्द होता है। जोड़ों के साथ-साथ घुटने में दर्द होता है। एक रूमेटिक आर्थराइटीस होता है। इसमें जोड़ों में दर्द होता है। घुटने में दर्द होने के कारण-

1. अधिक उम्र में घुटने में दर्द शुरू हो जाता है।
2. मोटापा अधिक होने के कारण स्त्री-पुरुष के घुटने उनका वजन सहन नहीं कर सकते, इससे दर्द शुरू हो जाता है।
3. झटका लगने पर या एक्सीडेंट के टाइम यह दर्द शुरू हो जाता है।
4. अपनी आयु के अनुसार खेलकूद होना चाहिए या कभी-कभी फुटबॉल, हॉकी, टेनिस खेलने से भी हो जाता है।
5. कभी-कभी अधिक आयु में जॉगिंग करने से होता है।
6. घुटने दर्द में उम्र की वजह से 'साइनोविल फ्ल्यूड' कम होने से दर्द होता है। घुटने दर्द में योग के द्वारा निवारण।

1. सर्वप्रथम डॉक्टर की सलाह ली जाए, उसके बाद अपनी आयु व शक्ति के अनुसार ही कार्य या खेलकूद किया जाए। जैसे- फुटबॉल, टेनिस, हॉकी।
2. मोटापा नहीं होने देना चाहिए। अपना वजन हमेशा संतुलित रखें। अधिक वजन से घुटनों में दर्द होता है।
3. जब कभी नीचे से भारी वजन उठाना हो तो उसमें उम्र व शक्ति का ध्यान रखना चाहिए। नीचे जाते वक्त घुटने को नीचे करना चाहिए।
4. घुटने में दर्द हो तब कार वाहन चलाते वक्त घुटनों को ठीक से सीधा रखना चाहिए।
5. अधिक देर कहीं बैठने का कार्य हो तो धीरे-धीरे उठाना चाहिए।

योग- में इसके लिए निम्नलिखित आसन है। जो किसी योग विशेषज्ञ से सीखकर और लम्बी गहरी सांस के साथ करना चाहिए।

1. ताड़ासन, 2. कोणासन, 3. मार्जरी आसन, 4. पादहस्तासन, 5. घुटने के नीचे तकिया रखकर 25-30 वक्त लम्बी गहरी सांस के साथ दबाना, 6. एक पाँव उठाना और 40-50 डिग्री जमीन से उठाना और अपनी शक्ति अनुसार रोकना और लम्बी गहरी सांस लेना।

6. साइकिल चलाना, 7. शरीर संचालन, 8. धनुर्षासन, 9. प्रार्थना आसन, 10. खड़े होकर घुटनों की कटोरी दायें-बायें चलाना या घुमाना 10 वक्त। 11. भोजन में पोष्टिक व संतुलित आहार। 12. भोजन नियंत्रित करना। 13. आसन प्राणायाम व श्वासन करते वक्त

नाड़ी संस्थान पर अकस्मात जोर नहीं पड़ना चाहिए। 14. भोजन में अधिकतर हरी ताजी तरकारी लाभदायक है। अंकुरित बीज भी लाभदायक है। गेहूँ, चावल, ज्वार, बाजरा का उपयोग कर सकते हैं। 15. आसनों में पवनमुक्तासन भी लाभदायक है। 16. स्त्री-पुरुष को अपना वजन नहीं बढ़ने देना चाहिए। 17. अलग-अलग दर्द, अलग-अलग उम्र के स्त्री पुरुषों के अनुसार से दर्द 15 दिन से 3 माह, 4 माह में ठीक होता है। यदि दर्द शुरू हुआ ही हो तो डॉक्टर से सलाह करके योग विशेषज्ञ की सहायता से योगासन, प्राणायाम, ध्यान की क्रिया शुरू की जाये तो जल्दी आराम हो सकता है। 18. मेरे यहाँ योग से रोग निवारण केन्द्र 25 पत्रकार कॉलोनी में घुटने का दर्द 20 दिन से 3 महीने के बीच योग प्रणाली से ठीक होते हैं। घुटनों पर नी-केप भी लगा सकते हैं। सूर्य की रोशनी में सिकाई करना। रात में गरम पानी की थैली से सेकने से आराम मिलता है। अपनी उम्र के अनुसार फुटबॉल, हॉकी, टेनिस, व्यायाम करना चाहिए। पैदल चलते वक्त झटके व गड्डों से बचना चाहिए। शक्ति के अनुसार सुबह या शाम 1 से 3 पैदल घुमना और नियमित भोजन किया जाए तो घुटने के दर्द में आश्चर्य जनक लाभ होता है। इसमें ध्यान, प्राणायाम, श्वासन व योगनिन्द्रा भी करनी चाहिए।

सोने से 1, 1/2 से 2 घंटे पहले रात का भोजन करना चाहिए। दिन में एक बार दिल खोलकर हँसना चाहिए।



-ए.के.रावल
योग-विशेषज्ञ

25, पत्रकार कॉलोनी (साकेत) इन्दौर
फोन 2565052



भरोसा और उम्मीद ही वह शक्ति है, जिससे आप अदृश्य को भी देख सकते हैं, अविश्वसनीय पर विश्वास कर सकते हैं और असंभव को भी संभव बना सकते हैं।

संकलन- जितेन्द्र ओमप्रकाश नागर, देवास

मोबाइल फोन आधुनिक युग की एक क्रान्तिकारी देन है। कुछ साल पहले जब कुछ लोगों के पास मोबाइल फोन हुआ करते थे, जनसाधारण को इसका ज्ञान नहीं था, तब रास्ते में कोई अपने आप से बात करता नजर आता था, हाथ कान पर होता था तब यही लगता था कि शायद यह आदमी पागल है। जो अपने आप से बातें करता जा रहा है। आज आलम यह है कि हर आदमी सड़क पर इसी तरह नजर आता है उसे न तो दीन-दुनिया की फिक्र है और नहीं सड़क के ट्रैफिक का डर। आप किसी सभा में हो चाहे वह शोक सभा ही क्यों न हो। शादी ब्याह हो, पूजा हो, हर जगह आदमी इसी के साथ व्यस्त है। कभी आदमी मुस्कुरा उठता है तो कभी गुस्सा करता है, पर साथ बैठा आदमी उसे नजर नहीं आता। कभी महसूस हुआ कि साथ वाला आदमी बोर हो रहा है तो 'प्लीज इस्क्यूज मी' कह देंगे। अगर फोटो लेने की इच्छा हुई तो सेल्फी हाजिर है। सेल्फी लेने का चलन तो आज एक मानसिक बीमारी का रूप लेता जा रहा है। इसका ज्वलंत उदाहरण तो इस सदी के महानायक अभिताभ बच्चनजी के साथ हुआ जो अपने परिचित के अंतिम संस्कार में गये थे, उनके वहाँ पहुँचते ही उनके साथ सेल्फी लेने की होड़ लग गयी। अजीब सा माहौल हो गया। इसका उन्हें बहुत अफसोस रहा। यह मानसिक अस्वस्थता का लक्षण है।

मोबाइल सेल्फी, फेसबुक, ट्विटर पर लगातार बने रहने के कारण जहाँ दूरदराज लोगों के साथ सम्पर्क बनता है वहाँ एक जगह पर मोबाइल के साथ बैठे रहने से अकेलापन भी बढ़ गया है। सैकड़ों दोस्त होने के बावजूद एक भी अपना नहीं होता। बेडरूम, बाथरूम में भी मोबाइल नहीं छूटता। आँकड़े बताते हैं कि 60 प्रतिशत लोगों की बगल में पत्नी या प्रेमिका की जगह मोबाइल स्मार्ट फोन होता है। मुसीबत के साथ सबसे पहले मोबाइल की याद आती है। आज की



जीवनशैली में यह जरूरी भी है। घर से निकलते समय फोन जरूर होना चाहिए।

21वीं सदी ने मोबाइल टैबलेट व्हाट्सएप के रूप में लोगों को एक ऐसा खिलौना पकड़ा दिया है कि लोगों के पास न खाने की फुरसत, न पीने की। एक हाथ खाने की प्लेट पर है तो दूसरा हाथ कान पर मोबाइल के साथ। लाख कहा जा रहा है कि लगातार डेहफोन या मोबाइल फोन से कान खराब हो जाते हैं, सुनने की शक्ति कम हो जाती है पर कोई सुनने को राजी नहीं है। सामने पड़ जाये तो नमस्ते भी नहीं करेंगे। पर व्हाट्सएप पर गुड मारनिंग जरूर करेंगे। नई पीढ़ी भजन कीर्तन में विश्वास नहीं करती पर व्हाट्सएप पर हनुमान चालीसा सुनने में कोई परहेज नहीं है और अगर हनुमान चालीसा अमिताभ बच्चनजी ने गाई हो तो कहना ही क्या। व्हाट्सएप पर अंगुलियां इतनी तेजी से फिरकती हैं कि पूछो मत घंटों बातें होती हैं जीभ या मुंह से बोलने की जरूरत ही नहीं पड़ती। कहा जाता है कि पहले आदमी को भी पूँछ हुआ करती थी पर प्रयोग में न आने के कारण Appendix के रूप में अंदर चली गई। तो डर है कि कहीं ऐसा न हो कि व्हाट्सएप के कारण मनुष्य का प्रबल हथियार जीभ भी लुप्त हो जाये तो क्या होगा?

हर चीज के दो पहलू होते हैं। मोबाइल में भी अच्छाई और बुराई दोनों ही हैं। गाँव-शहरों या दूरदराज जगह में नाते-रिश्तेदारों से जुड़े रहने का सबसे सरल और सुलभ माध्यम इंटरनेट या

फेसबुक है। किसी भी विषय की जानकारी लेनी है। तो गुगल हाजिर है। दूसरी तरफ आलम यह भी है कि लोग सुबह उठते ही सबसे पहले मैसेज देखते हैं। पारिवारिक छुट्टियों पर गये हैं तो मोबाइल पर लगे रहते हैं हर क्षण की फोटो लेने में ही व्यस्त हो जाते हैं। सारा मजा किरकिरा हो जाता है।

मेरा मतलब यह कदापि नहीं है कि मोबाइल व्हाट्सएप, फेसबुक, इंटरनेट बेकार की चीज है। यह आज के युग की मांग है। टी.वी. की तरह यह भी जरूरत बन गयी है। इसके बिना समाज की कल्पना ही नहीं की जा सकती। लेकिन इसके प्रयोग की सीमाएँ तय करनी पड़ेगी। व्हाट्सएप की दुनियाँ वहीं तक ठीक है जहाँ सामाजिक सरोकारों को जोड़ते भावनात्मक संतुलन बनाये रखे। लाईक, डिसलाइक से बचते अपना संसार बनाये। आमने-सामने के सम्बन्धों के बगीचे को सींचकर ही साइबर दुनिया के असंतुलन से बचा जा सकता है।

-सविता (नीलू) दवे
29, शांति विहार, दिल्ली



प्रार्थना में मन से जो भी मांगा जाता है वह फलित होता है। ईश्वर प्रार्थना को 'संध्या वंदन' भी कहते हैं। संध्या वंदन ही प्रार्थना है। यह आरती, जप, पूजा या पाठ, तंत्र, मंत्र आदि क्रियाकांड से भिन्न और सर्वश्रेष्ठ है।

नवधा भक्ति में से एक है प्रार्थना! प्रार्थना को उपासना, आराधना, वंदना, अर्चना भी कह सकते हैं। इसमें निराकार ईश्वर या देवताओं के प्रति कृतज्ञता और समर्पण का भाव व्यक्त किया जाता है। इसमें भजन या कीर्तन नहीं किया जाता। इसमें पूजा या आरती भी नहीं की जाती। प्रार्थना का असर बहुत जल्द होता है। समूह में की गई प्रार्थना तो और शीघ्र फलित होती है। सभी तरह की आराधना में श्रेष्ठ है प्रार्थना। वेदों की ऋचाएँ प्रकृति और ईश्वर के प्रति गहरी प्रार्थनाएँ ही तो हैं। ऋषि जानते थे प्रार्थना का रहस्य।

प्रार्थना का प्रचलन सभी धर्मों में है, लेकिन प्रार्थना करने के तरीके अलग-अलग हैं। तरीके कैसे भी हो जरूरी है प्रार्थना करना। प्रार्थना योगा भी अपने आप में एक अलग ही योग है, लेकिन कुछ लोग इसे योग के तप और ईश्वर प्राणिधान का हिस्सा मानते हैं। प्रार्थना को मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य प्राप्त करने की एक क्रिया भी माना जाता है।

कैसे करें प्रार्थना- ईश्वर, भगवान, देवी-देवता या प्रकृति के समक्ष प्रार्थना करने से मन और तन को शांति मिलती है। मंदिर घर या किसी एकांत स्थान पर खड़े होकर या फिर ध्यान मुद्रा में बैठकर दोनों हाथों को नमस्कार मुद्रा में ले आएं। अब मन-मस्तिष्क को एकदम शांत और शरीर को पूर्णतः शिथिल कर लें और आँखें बंद कर अपना सम्पूर्ण ध्यान अपने ईष्ट पर लगाएं। 15 मिनट तक एकदम शांत इसी मुद्रा में रहें तथा सांस की क्रिया सामान्य कर दें।

प्रार्थना के फायदे- प्रार्थना में मन से

क्यों, कैसे और कब करे प्रार्थना...

जो भी मांगा जाता है वह फलित होता है। ईश्वर प्रार्थना को 'संध्या वंदन' भी कहते हैं। संध्या वंदन ही प्रार्थना है। यह आरती, जप, पूजा या पाठ, तंत्र, मंत्र आदि क्रियाकांड से भिन्न और सर्वश्रेष्ठ है।

प्रार्थना से मन स्थिर और शांत रहता है। इससे क्रोध पर नियंत्रण पाया जा सकता है। इससे स्मरण शक्ति और चेहरे की चमक बढ़ जाती है। प्रतिदिन इसी तरह 15-20 मिनट प्रार्थना करने से व्यक्ति अपने आराध्य से जुड़ने लगता है और धीरे-धीरे उसके सारे संकट समाप्त होने लगते हैं।

प्रार्थना से मन में सकारात्मक ऊर्जा का विकास होता है तथा शरीर निरोगी बनता है।

प्रार्थना की शक्ति का महत्व- मनुष्य का जीवन उसकी शारीरिक एवं प्राणिक सत्ता में नहीं, अपितु उसकी मानसिक एवं आध्यात्मिक सत्ता में भी आकांक्षाओं तथा आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए और कामनाओं का है। जब उसे ज्ञान होता है कि एक महत्तर शक्ति संसार को संचालित कर रही है, तब वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए, अपनी विषम यात्रा में सहायता के लिए। अपने संघर्ष में रक्षा के लिए शक्ति प्राप्त करने के लिए प्रार्थना द्वारा उसकी शरण लेता है। प्रार्थना द्वारा भगवान की ओर साधारण धार्मिक पहुँच, अपने को ईश्वर की ओर मोड़ देने के लिए यह हमारी प्रार्थनारूपी विधि हमारी धार्मिक सत्ता का मौलिक प्रयत्न है, और एक सार्वभौम सत्य पर स्थित है- भले ही इससे कितनी भी अपूर्णताएँ हो और सचमुच अपूर्णताएँ हैं भी।

प्रार्थना के प्रभाव को प्रायः संदेह की दृष्टि से देखा जाता है और स्वयं प्रार्थना निरर्थक तथा निष्फल समझी जाती है। वैश्व संकल्प सदैव अपने लक्ष्य को ही कार्यान्वित करता है। वह सर्वज्ञ होने के कारण अपने बृहत्तर ज्ञान से कर्तव्य पहले ही जान लेता है, परन्तु यह व्यवस्था यांत्रिक नियम से नहीं, बल्कि कुछ शक्तियों एवं बलों के द्वारा



दो हमको विधा का दान,

कार्यान्वित होती है।

यह मानव संकल्प, अभीप्सा और श्रद्धा का एक विशेष रूप मात्र है। प्रारंभ में प्रार्थना निम्न स्तर भी हमारे संबंध को तैयार करने में सहायता पहुँचाती है। मुख्य वस्तु इस प्रकार का साक्षात् संबंध, मनुष्य का ईश्वर से सम्पर्क, सचेत आदान-प्रादन न कि पार्थिव वस्तु की प्राप्ति।

अपनी मानसिक रचना के निर्माण के बाद यदि व्यक्ति अपने को 'ईश कृपा' पर समर्पित कर देता है, और इसमें भरोसा रखता है तो उसको अवश्य ही सफलता मिलेगी। यदि कोई ईश्वर की कृपा का मात्र आह्वान करता है तो अपने को उसके हाथों में सौंप देता है, तो वह विशेष अपेक्षा नहीं करता।

प्रार्थना को सूत्रबद्ध करके किसी वस्तु के लिए निवेदन करना होगा। व्यक्ति को यह सवाल नहीं करना चाहिए। यदि सच्चाई के साथ सभी आंतरिक भावना के साथ याचना की जाए तो संभव है वह स्वीकृत हो जाए।

प्रार्थना से अपार शक्ति- भारत एक धर्मप्रधान देश है। यह जनजीवन में धर्म व संस्कृति का बड़ा प्रभाव है। सुबह की दिनचर्या से निवृत्त होने के बाद व्यक्ति पूजा-पाठ हेतु ईश्वर के समक्ष होता है। पूजा पश्चात् प्रार्थना का काफी महत्व है। प्रार्थना यानी ईश्वर से अपना सीधा संबंध जोड़ना। (क्रमशः)

-गायत्री मेहता, इन्दौर

मो.9407138599

श्रीराम कथा के अल्पज्ञात के दुर्लभ प्रसंग **प्रमुख रामकथाओं में श्री जानकीजी की अग्नि परीक्षा-2**

कठोर बातों से व्यथित होकर सीता ने चिता तैयार करवाई

विदितश्चास्तु भद्रं ते योऽयं रणपरिश्रमः ।
सुतीर्णं सुहृदां वीर्यान्न त्वदर्थं मया कृतः ॥
श्री.वा.रा.युद्धकाण्ड सर्ग 115-15

तुम्हारा कल्याण हो। तुम्हें ज्ञात होना चाहिये कि मैंने जो युद्ध का परिश्रम उठाया है तथा इन मित्रों ने पराक्रम से इसमें विजय प्राप्त की है, यह सब तुम्हें पाने के लिये नहीं किया है। श्रीराम ने जो कटु बात कही है वह सीता चुपचाप सुन रही थी। श्रीराम ने पुनः कहा कि-उन्होंने सदाचार की रक्षा, अपवाद के निवारण तथा अपने वंश पर लगे कलंक के परिमार्जन हेतु यह रावण वध व लंका विजय प्राप्त की है -

रावणाङ्क परिकिल्बिषां दृष्ट्यां दुष्टेन चक्षुषा ।
कथं त्वां पुनरादद्यां कुलव्यपदिशन्म हत् ॥
श्री.वा.रा.युद्धकाण्ड सर्ग 115-20

रावण तुम्हें अपनी गोद में उठाकर ले गया और तुम पर अपनी दूषित दृष्टि डाली हैं, ऐसी दशा में अपने कुल को महान बताता हुआ, मैं तुम्हें कैसे ग्रहण कर सकता हूँ। अब तुम जहाँ जाना चाहो जा सकती हो। अब मेरी तुम्हारे प्रति आसक्ति नहीं है। तुम चाहो तो भरत या लक्ष्मण के संरक्षण में सुखपूर्वक रहने का विचार कर सकती हो।

सीते ! तुम्हारी इच्छा हो तो तुम शत्रुध्न, वानरराज सुग्रीव अथवा राक्षसराज विभीषण के साथ भी रह सकती हो। सीताजी ने इतना सब सुनकर रोते-रोते श्रीराम से कहा - वीर आप ऐसी कठोर अनुचित, कर्णकटु और रूखी बात मुझे क्यों सुना रहे हैं। जैसे कोई निम्न श्रेणी का पुरुष निम्न कोटि की ही स्त्री से न कहने योग्य बातें भी कह डालता है। मैं सदाचार की शपथ लेकर कहती हूँ कि मैं संदेह योग्य नहीं हूँ। प्रभो ! रावण के शरीर से जो मेरे शरीर का स्पर्श हो गया है उसमें मेरी विवशता ही कारण है। मैंने स्वेच्छा से

ऐसा नहीं किया था। इसमें मेरे दुर्भाग्य का ही दोष है।

सदाचार के मर्म को जानने वाले देवता राजा जनक की यज्ञ भूमि से आविर्भूत होने के कारण ही मुझे जानकी कहकर पुकारा जाता है। वास्तव में मेरी उत्पत्ति जनक से नहीं हुई है। मैं भूमि से प्रकट हुई हूँ। मैं साधारण मानव जाति से विलक्षण हूँ। दिव्य हूँ। मेरा आचार विचार भी अलौकिक एवं दिव्य है, मुझमें चारित्रिक बल विद्यमान है किन्तु आपने इनको अधिक महत्व नहीं दिया। इतना कहते-कहते भरे गले से वे रोती और आँसू बहाती हुई दुःखी और



चिन्ताग्रस्त होकर सामने बैठे लक्ष्मण से कहा-
चिन्ता में कुरु सौमित्रे व्यसनस्याय भेषजम् ।
मिथ्यापवादोपहता नाहं जीवितुमुत्सहे ॥

श्री.वा.रा.युद्धकाण्ड सर्ग 116-18

सुमित्रानन्दन ! मेरे लिये चिता तैयार कर दो। मेरे इस दुःख की यही दवा है। मिथ्या कलंक से कलंकित होकर मैं जीवित नहीं रह सकती। सीताजी के ऐसे कहने पर लक्ष्मणजी ने अमर्ष के वशीभूत होकर श्रीराम की ओर देखा और श्रीराम के इशारे को उन्होंने सम्मति मानकर चिता तैयार कर दी। श्रीराम सिर झुकाये खड़े थे। उसी दशा में सीताजी ने उनकी

परिक्रमा की। चिता की अग्नि प्रज्वलित कर दी गई। सीताजी ने देवताओं तथा ब्राह्मणों को प्रणाम कर अग्निदेव के समीप जा कर कहा -

यथा में हृदयं नित्यं नापसर्पति राधवात् ।
तथा लोकस्य साक्षी मां सर्वतः पातु पावकः ॥
यथा मां शुद्धचरित्रां दुष्टां जानाति राधवः ।
तथा लोकस्य साक्षी मां सर्वतः पातु पावकः ॥
श्री.वारा.युद्धकाण्ड सर्ग 116-25-26

कभी मेरा हृदय एक क्षण के लिये श्री रघुनाथजी से दूर न हुआ हो तो सम्पूर्ण जगत् के साक्षी अग्निदेव मेरी सब ओर से रक्षा करें। मेरा चरित्र शुद्ध है फिर भी रघुनाथजी मुझे दूषित समझ रहे हैं। यदि मैं सर्वथा निष्कलंक होऊँ तो सम्पूर्ण जगत् के साक्षी हे अग्निदेव मेरी सब ओर से रक्षा करें। इतना कहकर सीताजी ने अग्निदेव (चिता) की परिक्रमा की और निशंक चित्त से उस प्रज्वलित अग्नि में समा गई। ऋषियों, देवताओं, गन्धर्वों, राक्षसों, स्त्रियों एवं वानरों ने जोर से हाहाकार किया।

इसी समय यक्षराज कुबेर, यमराज, इन्द्र, वरुण, शंकरजी, एवं ब्रह्माजी विमानों द्वारा श्रीरघुनाथजी के समीप पहुँच गये। इनसे श्रीराम ने कहा-मैं तो अपने आप को मनुष्य दशरथपुत्र राम ही समझता हूँ। भगवान्। मैं जो हूँ और जहाँ से आया हूँ, वह सब आप ही मुझे बतलाईये। उनके उत्तर में ब्रह्माजी ने कहा-आप चक्र धारण करने वाले नारायण हैं वराहदेव, परब्रह्म श्रीहरि उपेन्द्र हैं। आपने रावण का वध करने के लिये ही इस लोक में मनुष्य के शरीर में प्रवेश किया है। हम लोगों का कार्य आपने सम्पन्न कर दिया है। (क्रमशः)

-डॉ.नरेन्द्रकुमार मेहता, मानस शिरोमणि एवं विद्यावाचस्पति
103ए व्यास नगर, ऋषिनगर विस्तार
उज्जैन (म.प्र.)

यूँ अकेले छोड़कर माँ का चले जाना



संसार में सम्बंधों के अथाह समुद्र या यूँ कहिये कि सम्बंधों के महासागर में कई रिश्ते ऐसे होते हैं जो यदि जीवन यात्रा में साथ छोड़ कर चले जायें तो जीवन में एक लम्बी रिक्तता आ जाती है हम भी वो बदनसीब हैं जिनके जीवन में एक ऐसी रिक्तता आ गयी जिसको पाट पाना अब असम्भव सा महसूस होता है। हम अपने आप को भाग्यशाली मानते थे कि हमें वात्सल्य की प्रतिमूर्ति, हमारी खुशियों के लिए जी भर के आशीर्वाद लुटाने वाली, निश्चल, ममतामयी माँ श्रीमती कमलादेवी शर्मा के रूप में ताई जी (मेरी बड़ी सासुमाँ) मिलीं पर ईश्वर को शायद कुछ और ही मंजूर था।

शाजापुर जिले के ही बेरछा ग्राम के ही एक सम्पन्न परिवार में जन्म लिया साक्षात् देवी स्वरूपा हमारी बड़ी सासुमाँ याने कि ताईजी ने। अपने माता पिता द्वारा मिले अनमोल संस्कारों से सुरभित हो कर बेरछा ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण समाज के गौरव डॉ. चुन्नीलालजी शर्मा के बड़े सुपुत्र और हमारे बड़े पापा डॉ. मनोहरलालजी शर्मा की अर्धांगिनी ताईजी ने पूरे शर्मा परिवार को एक माला में गूँथकर जिस प्रकार से पारिवारिक और सामाजिक दायित्वों के निर्वहन के संस्कार दिए वह आज हमारी अनमोल धरोहर है। वे अपनी सासुमाँ स्व.श्रीमती

अन्नपूर्णादेवी शर्मा की माला का एक अनमोल रत्न थीं और उन्होंने अपनी सासुमाँ के समान ही अतिथि देवो भवः की परम्परा रूपी पताका को जिस सेवा भाव से फहराया वह हम सब के लिये एक प्रेरणा है।

पाक कला में निपुण हमारी बड़ी सासुमाँ के शुभ हाथों से बनी विशेष प्रकार की मिठाइयों का स्वाद जब कोई चखता तो बस उस स्वाद की मिठास के साथ साथ स्नेह और आदर से भरे हुए स्वागत सत्कार का तो प्रशंसक ही हो जाता। कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी मेरे ये कहने पर कि वो अपनी सासु माँ के समान साक्षात् माँ अन्नपूर्णा ही थीं। उन्होंने अपने गौरवपूर्ण जीवन काल के अंतिम ग्यारह वर्ष में हुई किडनी की बीमारी का जिस जिंदादिली,साहस और धैर्य से सामना किया वह वास्तव में केवल उन्हीं के बस की बात थी। ये तो उनकी कोख के ही संस्कारों का पुण्य प्रताप है जो उनके दोनों सुपुत्रों डॉ. मनोज शर्मा और मनीष शर्मा के द्वारा जिस श्रद्धा और समर्पण भाव के साथ निरन्तर उनकी सेवा की गयी वह सम्पूर्ण मानव जाति के लिए एक प्रेरणा है। सप्ताह में दो बार बेरछा से इंदौर आकर डायलिसिस की सुइयों की पीड़ादायक तकलीफ उन्होंने सिर्फ अपने परिवार की खुशियों की खातिर हँसते-हँसते पूरी जी दारी से झेली।

डायलिसिस के दौरान भी माता पार्वती के वस्त्र स्वयं अपने हाथों से सिलने के साथ साथ हरतालिका तीज के व्रत को करना कोई सामान्य बात नहीं है कई बार बीमार होने के बावजूद किसी भी मांगलिक, धार्मिक एवं सामाजिक प्रसंग या त्योहारों को जिस हर्ष,उल्लास और सेवा भाव से वो मनाती थीं वो उनकी सहनशीलता और कर्तव्यबोध की एक अद्भुत मिसाल ही थी। इसे चमत्कार ही माना जाये कि सृष्टि के रचियता शिव और मोक्षदायिनी माँ क्षिप्रा की अनन्य भक्त हमारी ताईजी श्रीमती कमलादेवी शर्मा ने अपनी अंतिम साँस भी इंदौर और देवास के मध्य क्षिप्रा नदी के तट (पुल)पर ही लीं और छोड़ गयीं आदर्श,त्याग, सेवा,संयम,सम्मान और सद्भावना की एक अमर गौरव गाथा। आदरणीय ताई जी के चरणों में शत् शत् नमन...

-श्रीमती वन्दना शलभ शर्मा
बेरछा मण्डी

पुण्य स्मरण

दिनांक 28-9-16

स्व.श्रद्धेय जीवनलालजी नागर

पू. जीवानंद स्वामी, उदयपुर

श्रद्धावनत- गणेश, गोपाल, दीपक, नितीन नागर परिवार, उदयपुर, नागर परिवारगण मोठीपोल, उदयपुर, जोशी जया नागर, जाधव, तिवारी, त्रिवेदी, परिवार

-पी.आर. जोशी, उषा नगर, इन्दौर

पं.गौरीकांतजी शर्मा, शाजापुर

डॉ.विष्णु दयाल शर्मा के पिताजी शांतिलाल शर्मा के पूज्य दादाजी पं.गौरीकांतजी शर्मा का देवलोकगमन 6 अगस्त 2016 को गया। शोकाकुल पं. शांतिलाल शर्मा, पं. हनुमान नागर, (दामाद) पं.पवन नागर, पं. रवि नागर, पं.प्रवीण शर्मा, प्रभाकर शर्मा।

25वां पुण्य स्मरण

पं.श्री मदन शंकर नागर

16 सितम्बर 1991

श्रद्धावनत- समस्त नागर परिवार, भगवतगढ़ (सवाईमाधोपुर) पौत्री अर्पणा नागर



सबके प्रति मातृत्व भाव उनकी विशेषता थीं...!

बड़े भाभी के नाम से मशहूर श्रीमती मानबाई झा का सबके प्रति मातृत्व भाव, सहयोग की भावना एवं अपनापन देखते ही बनता था, अपने से जुड़े सभी परिजनों सगे संबंधियों, फेक्ट्री में कार्यरत सभी कर्मचारियों से वे सक्रिय रूप से जुड़ी हुई थी, तथा शारीरिक अस्वस्थता के बावजूद वाहन से जाकर सबसे मिलती थीं।

उनका जन्म 1928 में झालरा पाटन (राज.) में हुआ तथा स्व.श्री जसवंत लालजी झा के बड़े सुपुत्र श्री चन्द्रशंकरजी झा के साथ आपका विवाह हुआ था,



वे झा परिवार की सबसे बड़ी बहू थी तथा सभी पर अपना स्नेह न्यौछावर करती थीं। जरूरतमंदों की मदद करना उनका मुख्य मकसद था तथा वे सब पर अपनी ममता लुटाती रही।

14 अगस्त 2016 एकादशी के दिन उनका परमधाम जाना तथा द्वादशी के दिन अंतिम संस्कार उनके पुण्यात्मा होने का स्वप्रमाण है। जयहाटकेश वाणी परिवार बड़े भाभी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परमपिता से प्रार्थना करता है कि उन्हें अपने चरणों में शरण दें।

सर्व गुण सम्पन्न स्व.श्रीमती कमला ठाकोर



स्व.श्रीमती कमला ठाकोर (सुपुत्री स्व.श्री जसवंतलालजी झा, राऊ) का जन्म 7 जुलाई 1942 को

हुआ था। उनका विवाह श्री नागेन्द्रभूषणजी के सुपुत्र श्री महेश ठाकोरजी (सुपुत्र स्व.श्री नागेन्द्रभूषणजी ठाकोर) के साथ हुआ।

उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन एक परिपूर्ण एवं प्रगाढ़ "गृह प्रबंधक" (होम मेकर) की भूमिका निभाते हुए व्यतीत किया। वे प्रसन्न स्वभाव की मालकिन थी। घर की सबसे बड़ी बहू होने की भूमिका उन्होंने बखूबी निभाई। घर के बड़े, छोटे सभी सदस्य उन्हें मान सम्मान एवं प्यार देते

थे। उन्होंने अपनी खूबियों से पूरे परिवार को एक सूत्र में बांधा हुआ था। श्रीमती कमला ठाकोर एक सुघड़ पत्नी एवं माँ थी। उनके अथक प्रयास, त्याग व प्यार से आज उनके सभी बच्चे अपनी जिंदगी में सफल व खुशहाल हैं। वे पाक कला में दक्ष थीं। नए पकवान बनाकर सब को दावत देना उन्हें आनंदित करता था। स्वयं द्वारा की गई सिलाई-बुनाई, कसीदा कारी, नवीनतम सजावट से वह घर को सदैव सुन्दर बनाए रखती थी। दिनांक 26 अगस्त 2016 को उनके परलोक गमन पर समस्त परिवार शोकसंतप्त हैं।

ठिकाना कब्र है कुछ तो

इबादत कर मुसाफिर

कहते हैं खाली हाथ किसी के

घर जाया नहीं करते

मैं अपने जीवन को एक पेशा नहीं मानता। मैं कर्म में विश्वास रखता हूँ। मैं परिस्थितियों से शिक्षा लेता हूँ। यह पेशा या नौकरी नहीं है यह तो जीवन का सार है।

जिंदगी हंसाए तब समझना कि
अच्छे कर्मों का फल मिल रहा है
और

जब जिंदगी रुलाए तब समझ
लेना कि अब अच्छे कर्म करने का
समय आ गया है...!!

पण्डित रमेश प्रसाद जी रावल : सहज, सरल, हंसमुख, मिलनसार व्यक्तित्व

कुछ लोग जीवन में अपनी सहजता एवं सरलता से एक विशेष पहचान बना लेते हैं ऐसा ही एक सहज, सरल, मिलनसार एवं हंसमुख व्यक्तित्व था पण्डित रमेश प्रसाद जी रावल का। आज भले ही वे हमारे साथ नहीं हैं परन्तु अपने जिंदादिल व्यवहार के कारण वे अपने रिश्तेदारों, परिचितों एवं समाजजनों के हृदय में हमेशा ही जिवित रहेंगे। पेशे से बैंक ऑफ बड़ोदा में प्रबंधक थे परन्तु अपने ब्राह्मण परिवार में जन्म लेने की सार्थकता सिद्ध करते हुए उन्होंने प्रकाण्ड पण्डित के रूप में भी समाज को अपनी सेवाएं प्रदान की। एक ओर जहां वे अपने बैंक कैरियर में उच्च पद पर रहते हुए भी अपने अधिनस्थों से सदा मित्रवत रहे वहीं समाज में भी उम्र एवं रिश्ते में बड़े होने के बावजूद उन्होंने समाज के छोटे से छोटे व्यक्ति से भी सदा ही स्नेहिल व्यवहार रखा। श्री रावल प्रकाण्ड विद्वान एवं कर्मकाण्डी ब्राह्मण के रूप में भी समाज में पहचाने जाते थे उन्हें ज्योतिष विद्या का भी अच्छा ज्ञान था। आप देवी के परमभक्त थे एवं दुर्गा सप्तशती का पाठ नियमित रूप से करते रहते थे। दुर्गा सप्तशती का पाठ आपको कंठस्थ था तथा जब आप एकाग्रचित्त होकर दुर्गासप्तशती का पाठ करते थे तो आपकी आंखों से अश्रु की धारा स्वयं बहने लगती थी। श्री रावल के मंत्रों के उच्च स्वर में उद्घोष के साथ ही पूजा विधि की बारीकियां वे सदा यजमान को समझाते थे जिसकी वजह से समाजजनों की ईश्वर एवं पूजा पाठ में रूचि जागृत होती थी।

श्री रावल की पहचान बैंक ऑफ बड़ोदा में एक शाखा के स्थापना में माहिर कर्मचारी के रूप में होती थी। श्री रावल ने अपने कार्यकाल में बैंक ऑफ बड़ोदा की अनेक शाखाओं की स्थापना का दायित्व बखुबी सम्हाला। उनके द्वारा स्थापित सभी शाखाओं ने आशा से अधिक कारोबार किया जिसके चलते सम्पूर्ण बैंक प्रबंधन श्री रावल की कार्यशैली का कायल रहा एवं नवीन शाखाओं की पदस्थापना



के लिये श्री रावल जी की सेवाएं विशेष रूप से बैंक द्वारा ली गई। श्री रावल ने राजस्थान में सर्वाधिक नवीन बैंक शाखाओं का गठन किया।

जीवन परिचय-रतलाम जिले के पिपलोदा नगर के पं. डॉ. सिद्धनाथ जी शर्मा एवं श्रीमती तराबाई शर्मा के यहां दिनांक 30 अप्रैल 1942 को बालक रमेश प्रसाद रावल का जन्म हुआ प्रारम्भिक शिक्षा रतलाम में पूर्ण कर प्रदेश की व्यावसायिक राजधानी कहे जाने वाले इन्दौर को अपने कर्मक्षेत्र के रूप में चुना एवं इन्दौर में रह कर उच्च शिक्षा हासिल की प्रतियोगी परीक्षाओं में अपनी तीक्ष्ण बुद्धि का दम दिखाते हुए राज्य सेवा परीक्षा, एवं बैंकिंग परीक्षा उत्तीर्ण की एवं बैंकिंग क्षेत्र को अपने कैरियर के रूप में चुना वर्ष 1967 में बैंक ऑफ बड़ोदा की ए.बी. रोड़ शाखा की स्थापना के दायित्व के साथ ही उनकी कैरियर की चुनौतियां प्रारंभ हुई। चुनौतियों का डट कर सामना करने में समर्थ श्री रावल जी ने कैरियर के दौरान आने वाली सभी चुनौतियां को सहजता से सामना किया एवं प्रगति के पथ पर आगे बढ़ते रहे। पारिवारिक पृष्ठ भूमि एवं स्वयं के धर्म के लगाव के चलते श्री रावल जी ने बैंक के कैरियर के साथ ही पण्डिताई को भी जारी रखा एवं दौगुनी मेहनत कर समाज के युवा वर्ग के सामने एक मिसाल पेश की। सरलता, सहजता, कर्मठता की प्रतिमूर्ति नागर समाज के गौरव पण्डित रमेश प्रसाद जी रावल दिनांक 25

अप्रैल 2016 को देह त्याग कर परमपिता परमेश्वर की शरण में चले गये।

समाज-श्री रावल नागर ब्राह्मण समाज के लिये प्रारंभ से ही पूर्णतः समर्पित रहे, अपनी बैंक सेवा से निवृत्ति के पश्चात आपने समाज सेवा में ओर अधिक समय दिया। समाज के सामुहिक यज्ञोपवित एवं सामुहिक विवाह कार्यक्रमों में आपने कर्मकाण्ड एवं पण्डित के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान की। वे समाज के लिये सदैव तन-मन-धन से समर्पित रहे।

परिवार-पिपलोदा के रावल परिवार में जन्मे रमेशप्रसादजी रावल के बड़े भाई पण्डित नवदुर्गाप्रसाद जी रावल हैं। श्री रावल का विवाह इकलेरा के प.श्री श्रीकांतजी व्यास की बड़ी पुत्री सुमन के साथ दिनांक 04 जुलाई 1964 को सम्पन्न हुआ था। श्री रावल ने अपने जीवन काल में अपनी चार पुत्रियों सौ. अलका-अक्षय मेहता बड़ोदरा, सौ.सरोज-अजय नागर सुखेड़ा, सौ.प्रिती-विजय नागर उदयपुर, सौ.हेमा-हर्ष मेहता इन्दौर एवं अपने पुत्र भावेश-सौ. अंजली का विवाह भी धुमधाम के साथ किया। एवं अपने अन्य पारिवारिक दायित्वों का भी सहजता से निर्वहन किया। श्री रावल, व्यास परिवार इकलेरा के दामाद थे परन्तु उन्होंने कभी भी इसका अहसास व्यास परिवार को नहीं होने दिया। व्यास परिवार में वे ऐसे घुल मिल गये थे कि व्यास परिवार के प्रत्येक सदस्य से उनका व्यक्तिगत संवाद होता था एवं वे सभी के दिलों के करीब रहते थे। व्यास परिवार के चहेते, व्यास परिवार के प्रत्येक सदस्य के हृदय में वास करने वाले हमारे परम आदरणीय पण्डित श्री रमेशप्रसादजी को सम्पूर्ण व्यास परिवार की ओर से अश्रुपूर्ण श्रद्धा सुमन सादर समर्पित है.....। ईश्वर से प्रार्थना है कि श्री रावल को अपने श्री चरणों में स्थापन प्रदान करें।

- गोपाल कृष्ण व्यास,
इकलेरा माताजी
मो. 9827060502



सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

भारत एक अद्भुत विरासत



15 अगस्त 1947 को गुलामी की बेड़ियों से मुक्त होकर भारत आज अपना 70वाँ आज़ादी पर्व मना रहा है, आज़ादी के लिए कुर्बान हुए अपने शहीदों की समृद्ध विरासत का हम जश्न मनाएं और युवा भारत की अनेकता में एकता की भावना में सराबोर हों, हम सब मिलकर आज़ादी के इस पर्व के रंग में रंग जाएं

हम सब मिलकर मनाएं आज़ादी पर्व :

- स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर सभी मुख्य शहरों में कैंडल लाइट तिरंगा मार्च
- मंत्रियों और जनप्रतिनिधियों द्वारा आज़ादी के संघर्ष से जुड़े महत्वपूर्ण स्थलों का श्रद्धापूर्ण भ्रमण
- स्वतंत्रता सेनानियों, आई.एन.ए. वीरों और शहीदों के रिश्तेदारों का सम्मान
- स्थानीय शिल्प, हैंडलूम और खादी उत्पादों की प्रदर्शनी
- आज़ादी के संघर्ष को रेखांकित करते सांस्कृतिक कार्यक्रम
- ग्रामीण खेल कूद और नाटक
- म्युनिसिपल मुख्यालयों और ग्रामीण क्षेत्रों में 'इंडिपेंडेंस डे रन' का आयोजन

"*ठमारे जिन् पूर्वजों ने देश के लिए जान की बाजी लगा बी, उनकी संतान होने के नाते, यह ठमारा कर्तव्य बनता है, कि ठमारे लिए आज़ादी देने वाले इन सभी महापुरुषों का स्मरण करें। आज समय की मांग है कि हम एक देश के रूप में एक सपने को ले करके, एक संकल्प को ले करके, एक मार्ग निर्धारित करके राष्ट्र को ऊंचाइयों की मंजिल तक ले जाएं।"*

- नरेन्द्र मोदी

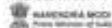
Stay Connected with the Prime Minister
Give missed call on 1800 20 90 920 to download the Narendra Modi App

Connect with PM



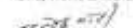
Narendramodi

Interact with PM



www.primdia.gov.in

News, Views & More



www.narendramodi.in

Share Ideas



www.mygov.in

आज़ादी 70 साव
याद करो कुर्बानी



गनी लालपंत देसाई



पुनर्देश्वर अचारे



दत्तप्रसाद शिंदे



भासा नायक



शुभर शिंदे



यशुवन्त शिंदे



गनी अखोटे



दत्त शिंदे



व.के. राजवाडे



राणा बळगधर शिंदे



सीताराम केकरे



शुभाय शिंदे माडलगे

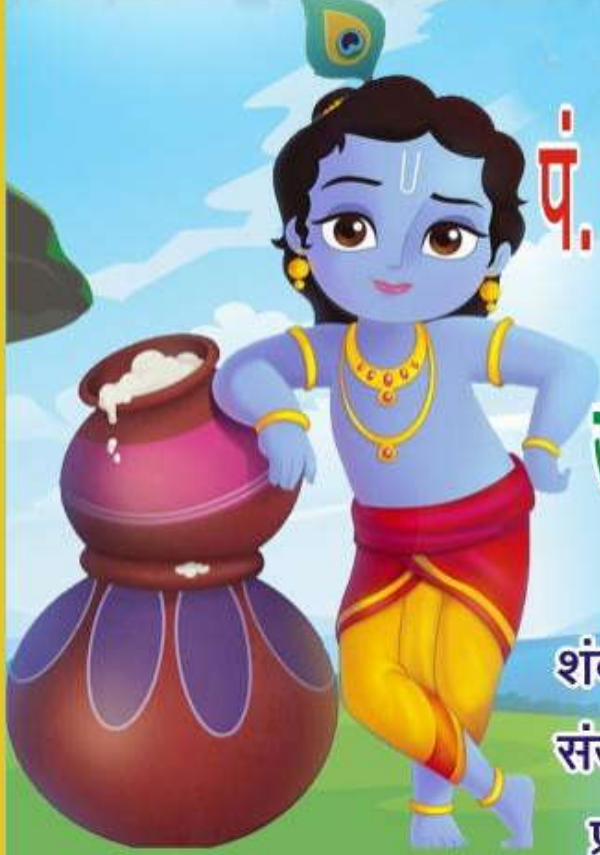
अपनी सांस-सांस लिख दी, जिन्होंने आजादी के नाम
उन वीरों को कोटि-कोटि प्रणाम

आइये, हम सब नये संकल्पों के साथ, परस्पर सद्भाव और एकजुटता से
मध्यप्रदेश को विकास की नयी ऊँचाईयों पर ले जाने में सहभागी बनें।

स्वतंत्रता दिवस पर शुभकामनाएँ

शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश





मालव माटी के गौरव

पं. श्री कमलकिशोरजी नागर
को जन्माष्टमी पर
जन्मदिन की बहुत-बहुत बधाई

:: शुभाकांक्षी ::

शंकरलाल नागर, भागवतदेवी नागर,
संजय नागर, प्रतीक नागर, रुद्रपर्ण,
प्रत्युम्न नागर एवं समस्त परिवार
बीमा नगर, इन्दौर

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक मनीष शर्मा द्वारा चैतन्य लोक प्रिंटर्स,
20, जूनी कसेरा बाखल, इन्दौर से मुद्रित एवं यही से प्रकाशित
सम्पादक : सौ. संगीता शर्मा (36) मो. 94250 63129

LATE POSTING